मीडिया मैप

उदार जनतंत्र का सजग प्रहरी

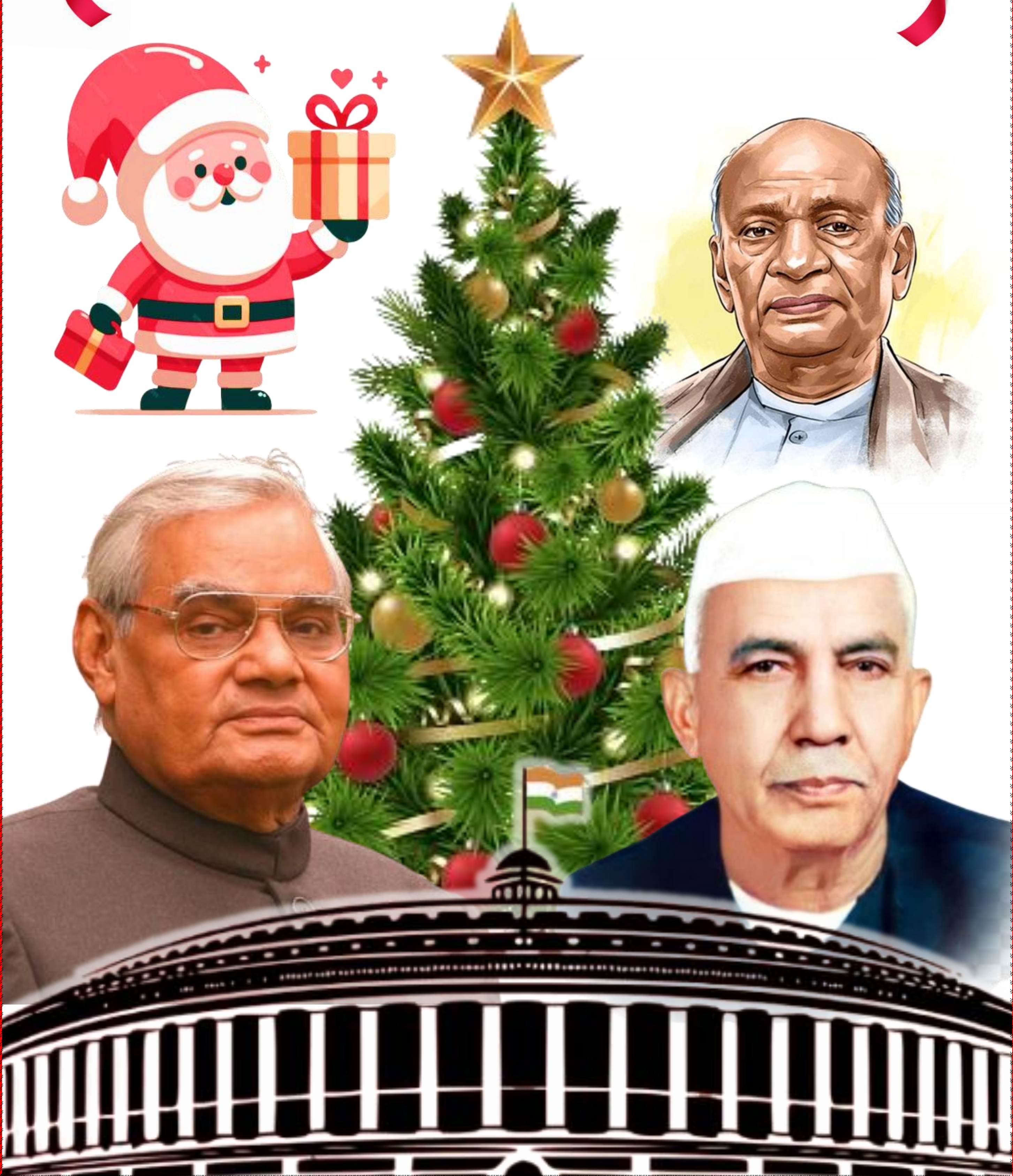

हम क्यों...

मीडिया मैप एक वैचारिक पत्रिका है। मीडिया जगत के नीतिपरक और मूल्यनिष्ठ बिन्दु तथा इनसे जुड़ाव रखने वाले आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक मुद्दे इसकी विषयवस्तु है। मीडिया मैप की संपादकीय नीति उदारवादी, आधुनिक, प्रगतिशील व सर्वधर्म समभाव की भावना पर आधारित है। मीडिया मैप हमारे बहुलतावादी समाज की विविधताओं से सृजित समस्त सोच, विचार, दृष्टिकोण, मूल्य और मान्यताओं को अपने में समाहित करने का एक प्रयास है । हमारा उद्देश्य वैज्ञानिक सोच द्वारा समाज से जुड़े मूल मुद्दों पर एक प्रबुद्ध जनमत विकसित करना है जिससे देश में संकुचित मानसिकता और आपसी टकराव से उपर उठकर एक उच्चस्तरीय विचार-विमर्श का वातावरण तैयार हो सके।

मीडिया मैप

संपादकीय सलाहकार मंडल

डॉ. रामजीलाल जांगिड
डॉ बलदेवराज गुप्त
डॉ जॉन दयाल
डॉ गौहर रजा
मंगल सिंह आजाद

संपादक

प्रो प्रदीप माथुर

संयुक्त संपादक

डॉ सतीश मिश्रा

सहयोगी संपादक

प्रो शिवजी सरकार

ब्यूरो प्रमुख

राजीव माथुर

मुख्य सह-संपादक

प्रशांत गौतम

सह-संपादक

अंकुर कुमार

मुख्य प्रबंधक

जगदीश गौतम

विधि परामर्शदाता

संजय माथुर

पंजीकृत कार्यलय

2325, सेक्टर - डी, पॉकेट - 2, वसंतकुंज, नई दिल्ली

कार्यालय

69 ज्ञानखंड-4 इंदिरापुरम गाजियाबाद-201014

दूरभाष - *9810385757 / 9910069262*

एम बी के एम फाउंडेशन प्रकाशन

ईमेल-

editor@mediamap.co.in

संपादकीय
पत्र पाठको के
एक झलक पिछले अंक की
विचार प्रवाह
राजनीति परिदृश्य

क्या वास्तव में चन्द्रचूड़ मोदी समर्थक थे?	डॉ. सलीम खान	9
आर्थिक जगत		
वैश्विक स्तर पर सोने की होड़ एक सुरक्षा प्रवृत्ति का संकेत	प्रो शिवाजी सरकार	11
ऊर्जा परिवर्तन: एक अच्छे भविष्य का मार्ग	राजीव माथुर	13
देश-विदेश		
ट्रम्प की वापसी: 2025 एजेंडा में अर्थव्यवस्था की बहाली और पूर्वी यूरोप का पुनर्निर्माण।	गोपाल मिश्रा	16
ट्रम्प की जीत सिद्धांत और नैतिकता की राजनीति के लिए एक झटका	डॉ. सतीश मिश्रा	18
राज्यों से		
राजनीति: क्या पंजाब में भाजपा का "बाहरी " उम्मीदवार उतारने का प्रयोग विफल हो गया है?	प्रभजोत सिंह	20
क्या बंटोगे तो कटोगे नारे ने मतदाताओं को प्रभावित किया	ज़ेबा हसन	21
क्या बिहार में प्रशांत कौशिक वोट कटवा बनेंगे?	मीडिया मैप न्यूज़	23
विविधा		
गांधीजी का मानवतावादी राष्ट्रवाद बनाम संघ परिवार का विभाजनकारी हिंदू राष्ट्रवाद	प्रो राम पुनियानी	25
आधुनिक गुरु का दृष्टिकोण: भगवा नहीं, सेवा का मार्ग	जगदीश गौतम	28
6 दिसंबर: डॉ. भीमराव अंबेडकर पुण्यतिथि		
दलित और महिला संघर्ष के लिए नेतृत्व डॉ. अम्बेडकर	प्रशांत गौतम	30
श्रद्धांजलि		
अलविदा, प्यारे मित्र: एक अनमोल रिश्ते की कहानी	प्रो प्रदीप माथुर	33
फिल्म जगत : 3 दिसंबर : देव आनंद पुण्यतिथि		
एक चमकता सितारा जिसकी फिल्में हमेशा अपने समय से आगे रही	प्रशांत गौतम	35
कथा साहित्य		
डूबते जहाज़ के भागते चूहे	दिनेश नारायण वर्मा	37

पत्र पाठको के

अरुण माथुर - बधाई हो जी, सभी लेख अद्‌भुत एवं आनंददायक हैं।

प्रो शिवाजी सरकार - नई पत्रिका का जन्म उत्साहवर्धक है। आपका एडिटोरियल एडवाइजर होना इसे ऊर्जा देगा। अच्छा लेख है। शुभकामनाएं।

शिखा त्यागी - उत्कृष्ट पत्रिका

एक झलक पिछले अंक की

नेहरू विरोधी अभियान का असली कारण और उसका आर्थिक पहलू

संघ परिवार की उच्च हिंदू वर्ग केन्द्रित राजनीति और जवाहरलाल नेहरू का पुरज़ोर विरोध भारतीय राजनीति का एक ऐसा विरोधाभास है जिसे समझना मुश्किल है। नेहरू जी उस कश्मीरी ब्राह्मण समाज से आते थे जो अपने को सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण मानते हैं क्योंकि उनमें वैदिक काल की उस आर्य जाति का विशुद्ध रक्त है जिसने सनातन धर्म की नींव रखी थी। - ***प्रो प्रदीप माथुर***

ऑनलाइन शिक्षा के तरीको में सुधार की आवश्यकता

भारत की शिक्षा व्यवस्था में लगभग 25 करोड़ छात्र स्कूलों में और 3.7 करोड़ कॉलेजों तथा व्यावसायिक संस्थानों में पढ़ाई कर रहे हैं, जो इसे दुनिया के सबसे बड़े शिक्षा तंत्रों में से एक बनाता है। हालांकि, इस विशाल संख्या के बावजूद, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 30% छात्र ही इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की सुविधा का लाभ उठा पा रहे हैं। कोरोना महामारी के दौरान, लॉकडाउन और संक्रमण के डर से स्कूल और कॉलेज बंद रहे, जिससे 70% छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हुई, जो किसी विकासशील देश के लिए एक गंभीर स्थिति है जहाँ शिक्षा पिछड़ेपन को मिटाने का एक प्रमुख साधन है। - ***डॉ. अनुभव माथुर***

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर स्मारक व्याख्यान

अक्टूबर 19 को एमबीकेएम फाउंडेशन ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर मनमोहन स्वरूप माथुर स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया। इस स्मारक व्याख्यान का उद्देश्य लोगों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के महत्व को समझने में मदद करना और समाज पर इसके प्रभाव के बारे में लोगों को जागरूक करना था।

उमर अब्दुल्ला के लिए मुख्यमंत्री पद काँटों का एक ताज

नेशनल कांफ्रेंस के उप प्रधान और फ़ारूक़ अब्दुल्ला के बेटे , उमर अब्दुल्ला जम्मू कश्मीर केंद्रशासित प्रदेश के पहले मुख्य मंत्री तो बन गए है लेकिन उनकी उप राज्यपाल, मनोज सिन्हा के साथ प्रशासन चलने पर खटपट चलतीं रहेगी । कारण यह होगा कि इससे पहले वह पांच जनवरी २००९ में छह साल के लिए मुख्य मंत्री पहली बार बने थे और उनके पास फुल पावर थी । लेकिन इस बार उमर पांच साल के लिए मुख्य मंत्री रहेंगे। उमर अब्दुल्ला की पार्टी नेशनल कांफ्रेंस को काफी वोट बैंक कश्मीर घाटी के साथ साथ जम्मू में भी मिला है । पंद्रह साल पहले बने मुख्यमंत्री और अब के मुख्यमंत्री में ज़मीन और आसमान का फर्क रहेगा . उमर अब्दुल्ला के सिर पर इस बार काँटों का ताज है. साथ में काफी चुनौतियां भी है। - ***अश्विनी कुमार***

गधा आदरणीय है क्योकि गधेपन की है भरमार

इस देश मे गधों की कमी नहीं है बल्कि गधों की भरमार है। इसी लिए गधापन सर्वव्यापी है। आप को कदम कदम पर गधापन मिलेगा। ऐसा गधापन की आप अपना गधापन भूल जाएंगे। जिधर भी जाएंगे गधापन नजर आएगा। हर क्षेत्र में गधेपन की लक्ष्मण रेखा खिंची हुई है।

आपको पढ़ने और समझने की गलती न हो ,इसलिए प्रारम्भ में ही यह साफ कर देना चाहता हूँ कि मै किसी गधे को प्रणाम नही कर रहा हूँ। गधे को तो मैं पूज्य और आदरणीय प्राणी मानता हूँ लेकिन गधेपन के सख्त खिलाफ हूँ। इसके बावजूद मैं गधेपन को प्रणाम करना अपना कर्तव्य और दायित्व मानता हूँ। इसलिए नहीं कि इंसानों की दो टांगो की तुलना में उसकी चार टांगे हैं और वह इंसानों से श्रेष्ठ प्राणी है,बल्कि अपनी दो अतिरिक्त टांगों से इंसानों को टंगड़ी या दुलत्ती मार कर गिरा भी सकता है। ये दो टांगे उसे लोकतंत्र ने प्रदान की है। - ***अनूप श्रीवास्तव***

महाराष्ट्र चुनाव परिणाम: क्या ईवीएम पर शक जायज़ है?

पिछले दिनों हरियाणा विधानसभा चुनाव परिणामों की तरह ही महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजे भी आश्चर्यजनक रहे। भाजपा के कार्यकर्ताओं और समर्थकों को इस अभूतपूर्व विजय की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। यहां तक कि भाजपा समर्थक मीडिया और एग्जिट पोल भी महायुति और महाअघाड़ी के बीच कड़ी टक्कर की संभावना जता रहे थे। चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस, शरद पवार की नेशनल कांग्रेस और उद्धव ठाकरे की शिवसेना को मिलता भारी जनसमर्थन भी इस बात की ओर इशारा कर रहा था कि महाविकास अघाड़ी या तो जीत सकती है या कड़ी टक्कर दे सकती है।

लोकसभा चुनाव में मात्र 150 दिन पहले कांग्रेस के नेतृत्व वाली इंडिया एलायंस को भारी सफलता मिली थी, जिससे यह धारणा बनी थी कि महाअघाड़ी विधानसभा चुनाव में भी अच्छा प्रदर्शन करेगी। लेकिन परिणाम इसके बिल्कुल विपरीत रहे। सवाल यह है कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को मिला समर्थन विधानसभा चुनाव में भाजपा गठबंधन की जीत में कैसे बदल गया?

चर्चा हो रही है कि भाजपा सरकार की नीतियों, जैसे *लाडली बहना योजना* और महिलाओं के खातों में सीधे धनराशि का हस्तांतरण, ने इस परिणाम को प्रभावित किया। हालांकि, भाजपा और उसके सहयोगी दल भी इन नतीजों पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर पा रहे हैं।

चुनाव हमारे लोकतांत्रिक ढांचे का आधार हैं। यह स्वाभाविक है कि सरकारें बदलती रहेंगी और सत्ता पक्ष व विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला चलता रहेगा। लेकिन इस चुनाव के संदर्भ में बड़ा सवाल चुनाव आयोग की निष्पक्षता का है। चुनाव आयोग पर किसी भी प्रकार का संदेह या लांछन लगना देश के लोकतंत्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। यह स्थिति किसी भी हाल में स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए।

क्या ईवीएम मशीनें छेड़छाड़ के लिए संवेदनशील हैं? तकनीकी विशेषज्ञ ही इसका स्पष्ट उत्तर दे सकते हैं। लेकिन यह सुनिश्चित करना चुनाव आयोग की जिम्मेदारी है कि उसकी निष्पक्षता पर किसी प्रकार का सवाल न उठे। इसके लिए चुनाव आयोग को पूरी चुनाव प्रक्रिया में विपक्षी दलों, सामाजिक संगठनों और बुद्धिजीवी वर्ग को शामिल करना होगा। यदि समाज के विभिन्न वर्ग चुनाव प्रक्रिया का हिस्सा बनेंगे और यह समझेंगे कि प्रक्रिया निष्पक्ष है, तो वे जनता के बीच इस विश्वास को मजबूत करेंगे।

भारत का लोकतंत्र विश्व में एक मिसाल है। इतनी बड़ी संख्या में मतदाताओं का वोट देना हमारे लिए गर्व की बात है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि चुनाव प्रक्रिया पर किसी भी प्रकार का संदेह न हो।

चुनाव प्रक्रिया में जनता, विशेषकर युवाओं का विश्वास होना अत्यंत आवश्यक है। यह विश्वास तभी आएगा जब उन्हें लगेगा कि चुनाव निष्पक्ष और पारदर्शी हैं। इसके लिए चुनाव आयोग, सरकार और न्यायपालिका को मिलकर काम करना होगा।

चुनाव केवल दो दलों या व्यक्तियों के बीच संघर्ष नहीं हैं। यह प्रत्येक नागरिक को प्रभावित करता है। इसीलिए समाज के सभी वर्गों, विशेषकर बौद्धिक वर्ग, को निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने में भूमिका निभानी चाहिए। यही हमारे लोकतंत्र को मजबूत बनाएगा और भारत को विश्व में गौरव दिलाएगा।

~ प्रो प्रदीप माथुर

स्वतंत्रता संग्राम के स्तंभ: पटेल और नेहरू का अटूट रिश्ता

महान स्वतंत्रता सेनानी, भारत के पहले उपप्रधानमंत्री, और ब्रिटिश राज के भारत के राज्यों और रियासतों को एकजुट कर देश को नई पहचान देने वाले नेता सरदार वल्लभभाई पटेल की पुण्यतिथि पर मीडिया मैप उनको उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। सरदार पटेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। महात्मा गांधी के वे घनिष्ठ सहयोगी और प्रशंसक थे, साथ ही एक कुशल प्रशासक भी।

यह दुःखद है कि आज राजनीति के कुछ निहित स्वार्थ द्वारा उन्हें एक अनावश्यक विवाद का हिस्सा बनाया जा रहा है। यह दावा किया जाता है कि पंडित नेहरू ने उनके साथ अन्याय किया और दोनों के बीच प्रतिस्पर्धा या मतभेद थे। यह धारणा निराधार है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम विभिन्न विचारधाराओं के लोगों का सामूहिक प्रयास था। इसमें पारंपरिक सोच रखने वाले भी थे और आधुनिक, प्रगतिशील विचारधारा वाले भी। स्वाभाविक था कि इतने विविध दृष्टिकोणों के बीच मतभेद होते। सरदार पटेल और पंडित नेहरू के बीच भी मतभेद थे, लेकिन इनसे उनके आपसी सम्मान और आदर पर कोई असर नहीं पड़ा। दोनों नेता महात्मा गांधी के प्रिय थे और उनके मार्गदर्शन में काम करते थे।

महात्मा गांधी की हत्या के समय सरदार पटेल गृह मंत्री थे। इस घटना ने पूरे देश को शोक में डाल दिया। सरदार पटेल ने खुद को दोषी महसूस किया क्योंकि वे गांधीजी की रक्षा नहीं कर सके। उन्होंने प्रधानमंत्री पंडित नेहरू को अपना इस्तीफा सौंपने की पेशकश की। नेहरू ने इसे अस्वीकार करते हुए कहा कि यह सबकी सामूहिक विफलता थी, और उन्होंने सरदार पटेल से अपने कर्तव्यों पर डटे रहने का आग्रह किया।

पटेल और नेहरू के बीच आपसी आदर का संबंध था। सरदार पटेल ने नेहरू को हमेशा अपना छोटा भाई माना। एक बार जब गुजरात में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, तो दूसरे दिन भारी भीड़ उमड़ी। सरदार पटेल ने हंसते हुए कहा, "आज लोग यहां जवाहरलाल नेहरू को देखने आए हैं।" यह उनकी लोकप्रियता को लेकर पटेल की सहज स्वीकृति थी।

जब नेहरू को प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव आया, तो पटेल ने इसका समर्थन किया। उम्र में बड़े और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के कारण, पटेल को यह एहसास था कि नेहरू देश को लंबे समय तक नेतृत्व देने के लिए बेहतर विकल्प हैं।

आज कुछ लोग सरदार पटेल की विरासत का इस्तेमाल करके नेहरू के प्रति नकारात्मक धारणा बनाने की कोशिश करते हैं। यह अनुचित और गलत है। पटेल और नेहरू दोनों स्वतंत्रता संग्राम के दो मजबूत स्तंभ थे। दोनों ने मिलकर भारत को दिशा दी।

सरदार पटेल जैसे महान नेता को किसी भी तरह के राजनीतिक विवाद का केंद्र बनाना उनके योगदान का अपमान है। आज सरदार पटेल की पुण्यतिथि पर हम यह समझे कि सरदार पटेल जैसा महान नेता किसी भी व्यक्तिगत विवाद किसी भी तरह की प्रतिस्पर्धा अरु आपसी लड़ाई झगडे से बहुत ऊपर था। सरदार पटेल को किसी भी तरह से एक राजनैतिक विवाद का या उठापटक का मुद्दा नहीं बनाना चाहिए।

****

सबसे गलत समझा जाने वाला राजनीतिक नेता

चौधरी चरण सिंह, भारतीय राजनीति के एक ऐसे नेता थे, जिन्हें अक्सर गलत समझा गया। उन्होंने एक बार कहा था, "राजनीति केवल शहरी अभिजात्य वर्ग का खेल नहीं है," जो उनके विचारों की गहराई को दर्शाता है। वे एक ऐसे नेता थे, जो अपने समय के अन्य नेताओं से अलग थे। चरण सिंह को एक ऐसे नेता के रूप में देखा गया, जो सच्चाई के लिए खड़ा होता था, लेकिन उन्हें एक कठिन राजनीतिक माहौल का सामना करना पड़ा, जिसमें बड़े व्यवसायों के हितों का दबदबा था।

चरण सिंह का पहला टकराव भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ हुआ, जब उन्होंने सहकारी खेती के मुद्दे पर अपनी राय रखी। यह टकराव 1959 में नागपुर में कांग्रेस सत्र के दौरान खुलकर सामने आया। नेहरू ने चरण सिंह की राय को तो सुना, लेकिन उनके विरोध को सहन नहीं किया। इस टकराव ने चरण सिंह को यूपी की कांग्रेस सरकार से इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया।

चरण सिंह ने हमेशा किसानों और ग्रामीणों के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि "राजनीति का केंद्र बिंदु गरीबों की समस्याओं का समाधान होना चाहिए।" उनका मानना था कि भ्रष्टाचार की शुरुआत शीर्ष से होती है और इसे समाप्त करने के लिए शीर्ष स्तर से शुरुआत करनी चाहिए। यह विचार उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था, लेकिन यह उन्हें कई शक्तिशाली लोगों के खिलाफ खड़ा कर देता था।

जब चरण सिंह ने जनता पार्टी की सरकार में गृह मंत्री का पद संभाला, तो उन्होंने भ्रष्टाचार के खिलाफ एक सख्त अभियान चलाया। लेकिन, यह अभियान उन्हें सत्ता में बैठे भ्रष्ट नेताओं और व्यवसायियों के खिलाफ खड़ा कर देता था। उनके इस प्रयास के कारण उन्हें अंततः गृह मंत्री के पद से हटा दिया गया।

चरण सिंह की छवि को मीडिया द्वारा भी नुकसान पहुंचाया गया। उन्हें "एंटी-हरिजन" और "प्रो-कुलक" जैसे लेबल से नवाजा गया, जबकि उन्होंने हमेशा हरिजनों के उत्थान के लिए काम किया। यह उनके लिए एक दुखद स्थिति थी, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में हरिजनों के लिए कई कार्य किए थे।

उनकी राजनीतिक यात्रा में, चरण सिंह ने हमेशा अपने सिद्धांतों के प्रति निष्ठा बनाए रखी। उन्होंने कहा, "राजनीति का खेल केवल सफलताओं के चारों ओर नहीं घूमना चाहिए, बल्कि यह समाज के सबसे कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए होना चाहिए।"

चरण सिंह का जीवन और कार्य हमें यह सिखाते हैं कि राजनीति में सच्चाई और नैतिकता की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे एक ऐसे नेता थे, जिन्होंने अपने सिद्धांतों के लिए संघर्ष किया, लेकिन उन्हें हमेशा गलत समझा गया। उनकी कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने नेताओं को सही तरीके से समझते हैं या नहीं।

चरण सिंह का योगदान भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण है, और उनकी विचारधारा आज भी प्रासंगिक है। वे एक ऐसे नेता थे, जिन्होंने अपने समय की राजनीतिक चुनौतियों का सामना किया और हमेशा सच्चाई के लिए खड़े रहे। उनकी विरासत हमें यह याद दिलाती है कि राजनीति में नैतिकता और सच्चाई की आवश्यकता है।

****

मतभेद नहीं, मनभेद से बचना: वाजपेयी जी की राजनीति का मंत्र

वर्ष के अंतिम माह में भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक और देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का भी जन्मदिन आता है। अटल बिहारी वाजपेयी अपनी तरह के एक अनूठे नेता थे जिनका सहज और सरल व्यक्तित्व उनके विरोधियो को भी उनका मित्र बनाता था। सही मामलों में अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के अजातशत्रु थे। कविहृदय अटल बिहारी वाजपेयी का एक खास तरह का आकर्षक व्यक्तित्व था। उनका कभी किसी से मन मुटाव या विरोध नहीं हुआ और शायद उन्होंने ही नारा दिया था कि राजनीति में मतभेद होना चाहिए लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए।

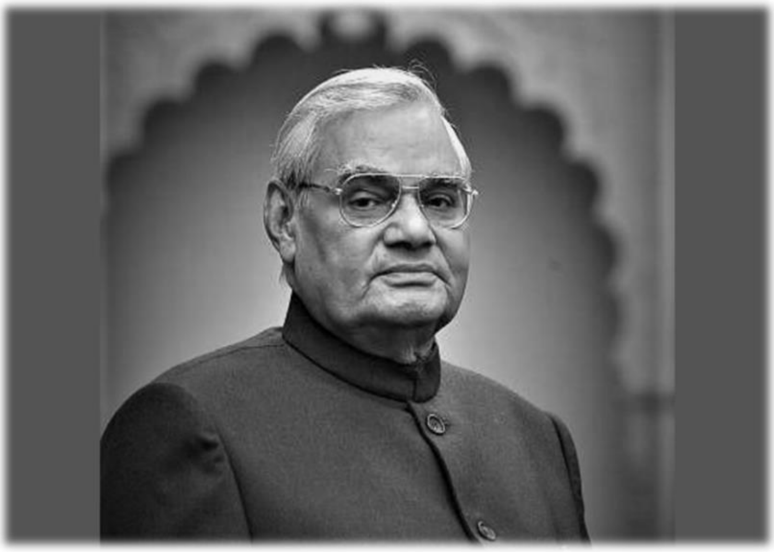

अटल बिहारी वाजपेयी का भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कोई योगदान नहीं था। और भी किसी क्षेत्र में भी उनका कोई और विशिस्ट योगिता नहीं थी। एक सामान्य विद्यार्थी होने के बाद उन्होंने एक स्वमसेवक के रूप में आरएसएस में प्रवेश किया। लेकिन अपनी संगठन क्शमता ' सहज स्वावभ ' लगन और जमीनी हकीकत को समझने के अपने गुणों के कारण उन्होंने संगघ में बहुत तेज़ी से अपना बहुत बड़ा स्थान बना लिया।

पत्रकारों से उनके संबंध सदैव बहुत अच्छे रहे । वह उनसे एक बड़े नेट आना होकर बिल्कुल बराबरी के साथ मिलते थे। भारतीय जनता पार्टी के हिंदूवादी चरित्र के बावजूद अटल बिहारी वाजपेयी के तमाम मुस्लिम मित्र और प्रशंसक थे। लखनऊ में अटल बिहारी वाजपेयी जब चुनाव लड़ते थे तो उनको सबसे ज्यादा सगठित वोट लखनऊ के शिया मुसलमानों के मिलते थे ।ब्राह्मण परिवार के बाद और एक पारंपरिक जीवन शैली के बावजूद अटल बरी वाजपेयी को मांसाहारी भोजन बहुत पसंद था।भाजपा संघ के सदस्य ये ना देखें इसलिए वाजपेयी जी चुपचाप इस तरह का भोजन और शायद इसके साथ मदिरापान भी करते थे। लेकिन इन सब बातो का पता होने के बावजूद भी कभी भी उनकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई। कांग्रेस से सैद्धांतिक विरोध के बावजूद भी अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के प्रशंसक थे । जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद जो उन्होंने उनकी राष्ट्र लोकसभा में उनकी नेहरू जी को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि सुनने के बाद आज भी अपने आंसुओं को रोकना मुश्किल हो जाता है।

दुख की बात है कि आज भाजपा उन लोग के हाथ में है जो ना सिर्फ कांग्रेस, जवाहर लाल नेहरू, महात्मा गाँधी का विरोध करते हैं बल्कि स्वतंत्र संग्राम पर भी प्रश्न चिन्ह लगते हैं। यह लोग भाजपा के संस्थापक और भाजपा के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की भी अवमानना करते हैं। यह कहना कि आजादी के 70 वर्षों में कोई काम नहीं हुआ, वह काम तभी हुआ जब 1914 में नरेंद्र मोदी सरकार में आए इस बात को भुला देता है कि 70 वर्षों में छह वर्ष अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे और उनके शासनकाल में काफी बड़े काम हुए। देश में जो सड़कों का जो जाल बिछा, इसका पूरा काम अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में हुआ। साथ ही साथ पाकिस्तान से संबंध सुधारने में भी अटल बिहारी वाजपेयी की भाजपा सरकार का बहुत बड़ा योगदान था।

अटल बिहारी वाजपेयी को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए आवश्यक है कि हम उनके सरल, सहज और विनर्म व्यक्तित्व को समझे एवं प्रधानमंत्री के रूप में उनके उनके योगदान को ना नाकारे ।

****

क्या वास्तव में चन्द्रचूड़ मोदी समर्थक थे ?

डॉ. सलीम खान

महाराष्ट्र में भाजपा गठबंधन की अभूतपूर्व विजय ने सभी को चौंका दिया। कुछ लोग इस विजय का विश्लेषण करते हुए यह कह रहे हैं कि इसकी पृष्ठभूमि मुख्य न्यायाधीश डी वाई चन्द्रचूड़ के उस फैसले में छिपी है, जो उन्होंने हाल ही में सुनाया था।

जब गणेश पूजा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अचानक चन्द्रचूड़ के घर पहुंचे और यह खबर चारों ओर फैल गई, तो चर्चा शुरू हो गई कि दोनों के बीच कोई डील हो गई है। ऐसा कहा जा रहा था कि चन्द्रचूड़ को सेवा निवृत्ति के बाद कोई महत्वपूर्ण सरकारी पद मिलेगा। लेकिन क्या वास्तव में न्यायमूर्ति चन्द्रचूड़ ने अपने पद की गरिमा से समझौता किया था? उनके सेवाकाल के अंतिम सप्ताह में लिए गए फैसले से ऐसा बिल्कुल नहीं लगता।

चीफ जस्टिस डीवाई चन्द्रचूड़ के

> **न्याय और गरिमा का संगम"**
> मुख्य न्यायाधीश डीवाई चन्द्रचूड़ ने अपने सेवाकाल के अंतिम दिनों में न केवल अपनी गरिमा बनाए रखी, बल्कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता और अल्पसंख्यक अधिकारों का भी दृढ़ता से संरक्षण किया।

अंतिम हफ्ते में मामलों की सूची चौंकाने वाली थी। उन्होंने न केवल प्रधानमंत्री के साथ आरती की, बल्कि बाबरी मस्जिद के फैसले को राम भरोसे छोड़ने की स्वीकृति भी दी। इसलिए यह लगा कि वे जाते-जाते न केवल मदरसा एक्ट को असंवैधानिक करार देंगे, बल्कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अल्पसंख्यक चरित्र को भी समाप्त कर देंगे। ऐसा करने से उनके लिए राष्ट्रपति पद या किसी राज्य का गवर्नर बनने का रास्ता साफ हो जाता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

चन्द्रचूड़ ने मदरसा एक्ट के बाद अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अल्पसंख्यक चरित्र को भी सुरक्षित रखा। इसके अलावा, उन्होंने सरकारी दमन के खिलाफ 25 लाख रुपये के मुआवजे का फैसला सुनाकर सरकारी दबंगई पर भी प्रहार किया। यदि प्रधानमंत्री को यह अंदाजा होता कि वे जाते-जाते यह सब करने वाले हैं, तो शायद वे गणपति की आरती के लिए किसी और का दरवाजा खटखटाते।

जस्टिस चन्द्रचूड़ ने अपने अंतिम हफ्ते में न केवल अपनी व्यक्तिगत गरिमा को बनाए रखा, बल्कि न्यायपालिका की भी लाज रखी।

सुप्रीम कोर्ट ने चीफ जस्टिस के अंतिम दिन 4-3 के बहुमत से अजीज बाशा केस में 1967 के अपने ही फैसले को रद्द कर दिया। इस फैसले में मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अल्पसंख्यक चरित्र को निरस्त कर दिया गया था। अब सर्वोच्च न्यायालय ने हालिया फैसले में निर्देश दिया है कि किसी शिक्षण संस्थान का अल्पसंख्यक दर्जा केवल इस आधार पर नहीं निरस्त किया जाएगा कि संसद ने उसके नियंत्रण के लिए कोई कानून बनाया है।

> **"ए.एम.यू. को न्याय"**
> सुप्रीम कोर्ट ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अल्पसंख्यक दर्जे को बहाल कर एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिससे न्यायपालिका की निष्पक्षता और संवैधानिक मूल्यों की जीत हुई।

इस तरह, अजीज बाशा मुकदमे में सुप्रीम कोर्ट के पूर्व पक्ष और तर्क दोनों को गलत ठहराते हुए मुस्लिम यूनिवर्सिटी का अल्पसंख्यक दर्जा बहाल कर दिया गया।

जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस सतीशचंद्र शर्मा ने इस फैसले के खिलाफ एक तकनीकी बिंदु उठाया। उन्होंने कहा कि 1981 में दो जजों की बेंच द्वारा केस को सात जजों की बेंच में भेजना कानून के अनुसार गलत था। चीफ जस्टिस चन्द्रचूड़ ने निर्णय सुनाते हुए कहा कि धारा 30 का क्रियान्वयन उन सभी संस्थाओं पर समान रूप से होता है जो भारतीय संविधान के लागू होने से पहले स्थापित हुई हों या लागू होने के बाद अस्तित्व में आई हों।

सुप्रीम कोर्ट ने अल्पसंख्यक चरित्र की रक्षा के लिए उसकी पूरी प्रबंधन में होने की शर्त भी समाप्त कर दी। इसका मतलब यह है कि सरकार अल्पसंख्यक संस्थाओं को चलाने के लिए संसाधन उपलब्ध कराने से इनकार नहीं कर सकती।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (ए.एम.यू.) की स्थापना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। यह सर सैयद अहमद खान के सपनों का परिणाम है। 1857 की पहली जंगे-आज़ादी ने सैयद अहमद की जिंदगी को बदल दिया। उन्होंने मुसलमानों को अंग्रेजी भाषा और आधुनिक शिक्षा में दक्षता प्राप्त करने की आवश्यकता को समझा और इस उद्देश्य के लिए यह शिक्षण संस्थान स्थापित किया।

सर सैयद ने 1875 में अलीगढ़ में 'मदरसतुल-उलूम मुसलमानाने-हिन्द' की स्थापना की। उनका उद्देश्य इस्लामी मूल्यों को बनाए रखते हुए ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के अनुसार कॉलेज स्थापित करना था। यह कॉलेज प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का एक सुंदर संगम था। उन्होंने पश्चिमी शिक्षा की आवश्यकता को समझा, लेकिन पूर्वी शिक्षा की भी अनदेखी नहीं की। सर सैयद का लक्ष्य केवल अलीगढ़ में एक कॉलेज की स्थापना तक सीमित नहीं था, बल्कि पूरे देश में मुसलमानों के लिए शिक्षण संस्थानों का नेटवर्क फैलाना था।

इस उद्देश्य के लिए उन्होंने ऑल इंडिया मुस्लिम एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस की शुरुआत की, जो भारत में अपनी तरह का पहला मुस्लिम एनजीओ था। इसने मुसलमानों में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता पैदा करने का कार्य किया।

हालांकि, यह गलतफहमी फैलाई गई कि 1920 में अंग्रेजी सरकार द्वारा शाही कानून के आधार पर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (ए.एम.यू.) एक्ट मंजूर होने के बाद ही ए.एम.यू. की स्थापना हुई। वास्तव में, 1877 में मुहम्मडन ऐंगलो ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना ही ए.एम.यू. की नींव बनी।

इसके बाद, ए.एम.यू. (संशोधन) एक्ट 1951 और ए.एम.यू. (संशोधन) एक्ट 1965 के द्वारा और परिवर्तन किए गए, लेकिन मूल रूप से ये सब मुहम्मडन ऐंगलो ओरिएंटल कॉलेज के आगे की प्रक्रिया ही थी। 1967 में सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की संवैधानिक पीठ ने ए.एम.यू. के केंद्रीय विश्वविद्यालय होने के कारण इससे अल्पसंख्यक चरित्र छीन लिया।

1981 में सुप्रीम कोर्ट के दो जजों की पीठ ने इस फैसले पर सवाल उठाया और इसे सात जजों की बड़ी बेंच के पास भेज दिया। इसी साल, संसद ने ए.एम.यू. (संशोधन) एक्ट 1981 मंजूर करके यूनिवर्सिटी को अल्पसंख्यक का दर्जा दे दिया।

> **"चन्द्रचूड़ का ऐतिहासिक फैसला"**
> जस्टिस डीवाई चन्द्रचूड़ ने जाते-जाते इतिहास रचते हुए ए.एम.यू. के अल्पसंख्यक चरित्र को सुरक्षित किया और अल्पसंख्यक संस्थानों के अधिकारों को नई मजबूती दी।

2006 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 1981 के कानून में ए.एम.यू. को अल्पसंख्यक दर्जा देने वाली उपधारा समाप्त कर दी। इस मामले में एक ओर सरकार थी और दूसरी ओर अदालत। ऐसे में सरकार की जिम्मेदारी थी कि वह अपने कानून का बचाव करे, लेकिन चूंकि मुसलमानों से मोदी सरकार को बैर था, मामला उलट गया। 2016 में भारतीय जनता पार्टी की मोदी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया कि वह मनमोहन सिंह सरकार की ओर से हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ दायर की गई अपील को वापस लेना चाहती है। फरवरी 2019 में सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों की पीठ ने इस मामले को सात जजों की संवैधानिक पीठ के पास भेज दिया।

इस तरह, 9 जनवरी, 2024 को चीफ जस्टिस डीवाई चन्द्रचूड़ की अध्यक्षता वाली 7 जजों की बेंच ने ए.एम.यू. की अल्पसंख्यक हैसियत की महत्वपूर्ण समस्या पर तर्कों की सुनवाई शुरू की। 1 फरवरी 2024 को इस मामले पर अपना फैसला सुरक्षित कर लिया।

यह फैसला 7 महीने तक ठंडे बस्ते में पड़ा रहा, और जस्टिस चन्द्रचूड़ इसे अपने काम के अंतिम दिन उलट सकते थे। लेकिन उन्होंने 1967 के उस फैसले को पलट दिया जिसने ए.एम.यू. की अल्पसंख्यक हैसियत को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।

अब जो निर्देश सुप्रीम कोर्ट ने तय किए हैं, उनकी रोशनी में जब तीन जजों की बेंच ए.एम.यू. की अल्पसंख्यक हैसियत को स्वीकार करेगी, तो वहाँ अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (ईडब्ल्यूएस) के लिए सीटें सुरक्षित करने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। इसके बाद मुसलमानों के अति प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान की स्वायत्तता भी बहाल हो जाएगी!

****

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

वैश्विक स्तर पर सोने की होड़ एक असुरक्षा की प्रवृत्ति का संकेत

प्रो शिवाजी सरकार

राष्ट्रीय संपदा की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारत ने इंग्लैंड की तिजोरियों से 214 टन सोना वापस लाया है, जो बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और आसन्न प्रतिबंधों को लेकर बढ़ती चिंता का संकेत है। यह बदलाव एक व्यापक प्रवृत्ति को दर्शाता है, जिसमें वैश्विक स्तर पर केंद्रीय बैंक अपनी सोने की खरीद बढ़ा रहे हैं।

अकेले मई में ही भारत ने बैंक ऑफ इंग्लैंड से 100 टन सोना वापस मंगाया, जिससे वैश्विक अनिश्चितता के बीच परिसंपत्तियों को सुरक्षित रखने की रणनीति को बल मिला। अब, जब वैश्विक सोने की कीमतें संभावित 3,000 डॉलर प्रति औंस की ओर बढ़ रही हैं, तो दुनिया इस पर करीब से नज़र रख रही है, और भारत इन अस्थिर समय में कीमती धातुओं को सुरक्षित रखने की दौड़ में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है।

भारत सरकार ने वैश्विक भू-राजनीतिक अशांति के मद्देनजर अपनी संपत्तियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देने का फैसला किया है। मई में बैंक ऑफ इंग्लैंड से करीब 100 टन सोना वापस किया गया। बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (बीआईएस) और बैंक ऑफ इंग्लैंड की हिरासत में कुल 324.01 मीट्रिक टन सोना रखा गया था, जबकि 510.46 मीट्रिक टन सोना घरेलू स्तर पर रखा गया था। इसके अलावा, 20.26 मीट्रिक टन सोना जमा के रूप में संग्रहीत किया गया था।

गोल्डमैन सैक्स के अनुसार, विश्व बाजार में सोने का मूल्य 3000 डॉलर प्रति औंस तक बढ़ने का अनुमान है।

दिवाली 2024 के बाजार की चमक कई कारणों से फीकी नजर आ रही है, बावजूद इसके कि पटाखों की बिक्री नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के प्रतिबंध से पहले के अस्पष्ट युगों में वापस चली गई है। पारंपरिक सोने की बिक्री पिछले वर्षों के उच्च स्तर को नहीं छू सकी क्योंकि धातु की कीमत पिछले साल की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत अधिक, लगभग 78,430 रुपये थी। इंडियन बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन के अनुसार, "चांदी की बिक्री में 33 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि सोने की मात्रा में 15% की गिरावट आई।" कहा जाता है कि बाजार में 2015 या 2019 की तरह ही चहल-पहल है, जो मंदी के साल थे।

> भारत ने इंग्लैंड की तिजोरियों से 214 टन सोना वापस लाकर अपनी राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा को प्राथमिकता दी है। यह कदम बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक आर्थिक संकटों के बीच आया है। मई में 100 टन सोने की वापसी के बाद, भारत वैश्विक सोने की दौड़ में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है, क्योंकि सोने की कीमतें रिकॉर्ड ऊंचाइयों की ओर बढ़ रही हैं।

"विदेशी मुद्रा भंडार के प्रबंधन पर 43वीं अर्धवार्षिक रिपोर्ट: अप्रैल-सितंबर 2024" शीर्षक वाली अपनी रिपोर्ट में आरबीआई ने कहा कि उसके पास घरेलू और विदेशी भंडार सुविधाओं में कुल 854.73 मीट्रिक टन सोना है। आरबीआई अपने विदेशी मुद्रा भंडार में विविधता लाने और बाहरी जोखिमों से बचाव के लिए सोना खरीद रहा है। 2024 में आरबीआई ने अपने भंडार में 54.7 टन सोना जोड़ा, जो पिछले तीन सालों में सबसे अधिक अधिग्रहण है।

यूक्रेन युद्ध के बाद, 300 बिलियन डॉलर की रूसी मुद्रा और अन्य संपत्तियां, जिन्हें अमेरिकी डॉलर, यूरो और स्टर्लिंग पाउंड में रिजर्व के रूप में रखा गया था, अमेरिका और जी 7 देशों द्वारा जब्त कर ली गईं। इन संपत्तियों का इस्तेमाल यूक्रेन को हथियार और अन्य आपूर्ति के लिए धन जुटाने के लिए किया जा रहा है।

भारत ने तब से रूसी कच्चे तेल की खरीद के सौदों में भी सावधानी बरती है। कनाडा के साथ हाल ही में हुए विवाद और लेबनान और ईरान में अमेरिका-इजरायल के बीच युद्ध की तीव्रता ने सतर्कता को और बढ़ा दिया है। इसने आरबीआई को सोना वापस लाने के लिए मजबूर किया, जो डॉलर के बजाय सोने के रूप में भुगतान के लिए सोना खरीद रहा है और इसे विदेश में जमा कर रहा है। आरबीआई तिजोरी किराए के रूप में भी बड़ी रकम बचाता है।

दुनिया के दूसरे सबसे बड़े सोने के उपभोक्ता में मजबूत मांग वैश्विक

कीमतों को और बढ़ा सकती है, जो पिछले सप्ताह रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गई थी। सोने के आयात की बढ़ती मांग भारत के व्यापार घाटे को भी बढ़ा सकती है और रुपये पर दबाव डाल सकती है। हां, भारत की सोने की खरीद ने वैश्विक सोने की कीमतों में वृद्धि में योगदान दिया है।

विश्व स्वर्ण परिषद (डब्ल्यूजीसी) ने बुधवार को कहा कि 2024 में भारत की सोने की मांग चार साल के निचले स्तर पर आ सकती है, क्योंकि कीमतों में रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने से त्योहारी सीजन के दौरान खरीदारी कम हो सकती है।

WGC के भारतीय परिचालन के सीईओ सचिन जैन के अनुसार, दुनिया के दूसरे सबसे बड़े उपभोक्ता देश में सोने की मांग 2024 में लगभग 700 और 750 मीट्रिक टन रह सकती है, जो 2020 के बाद सबसे कम है और पिछले साल के 761 टन से कम है। इस धनतेरस पर भारत में सोने की बिक्री पिछले साल के 42 टन से घटकर 35 टन रह गई।

इस साल सोना कई बार अपने सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है। केंद्रीय बैंकों द्वारा सोने की छड़ों की बड़ी खरीद ने 2022 से दर और मूल्य स्तरों के बीच के संबंध को फिर से स्थापित कर दिया है। गोल्डमैन सैक्स रिसर्च का अनुमान है कि 100 टन की भौतिक मांग सोने की कीमतों में कम से कम 2.4 प्रतिशत की वृद्धि करती है।

क्रेडिट कार्ड का उपयोग भी नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया, सितंबर में कार्ड से खर्च 80,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 57 प्रतिशत की वृद्धि है।

खुदरा दुकानों में परेशानी है क्योंकि बहुत से लोग ऑनलाइन शॉपिंग की ओर रुख कर रहे हैं, इसलिए ग्राहकों की संख्या कम हो गई है। अमेजन और फ्लिपकार्ट दोनों ने दिवाली सीजन में शानदार प्रदर्शन किया है, जिसमें फ्लिपकार्ट ने अक्टूबर की शुरुआती बिक्री के दौरान 64 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ बढ़त हासिल की है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से बिक्री में साल दर साल 23 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जिसमें 32,000 करोड़ रुपये के सामान की बिक्री हुई।

ज़्यादातर लोग बीएनपीएल या बाय नाउ पे लेटर वाले ग्राहक हैं या क्रेडिट कार्ड की मदद से किश्तों में भुगतान कर रहे हैं, जो लोगों के बीच नकदी की कमी को दर्शाता है। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से टियर 2 और टियर 3 शहरों के नए खरीदारों के बीच स्पष्ट थी।

> 2024 में भारत में सोने की मांग में गिरावट का अनुमान है, खासकर उच्च कीमतों के कारण। दिवाली सीज़न में सोने की बिक्री कम हुई, जबकि चांदी की बिक्री में वृद्धि देखी गई। इस बीच, ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्मों पर बिक्री में 23% का उछाल आया है, जिससे दिखता है कि उपभोक्ता अपने खर्चों को किश्तों में बांटने के लिए क्रेडिट कार्ड और BNPL का अधिक इस्तेमाल कर रहे हैं।

साल के ज़्यादातर समय कारों की बिक्री में गिरावट देखने को मिली है, लेकिन दशहरा और दिवाली के त्यौहारी सीज़न के दौरान इसमें मामूली तेज़ी देखने को मिली है। सितंबर में मारुति का मुनाफ़ा 18 प्रतिशत घटकर 3102 करोड़ रुपये रह गया, जबकि एक साल पहले यह 3762 करोड़ रुपये था। मारुति के सीईओ आरसी भार्गव कहते हैं कि "किफ़ायती होना चिंता का विषय है"। 10 लाख रुपये से कम कीमत वाली कारों की मांग बनी हुई है। फेडरेशन ऑफ़ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन का कहना है कि छोटी कारों का स्टॉक 80-85 दिनों के "ऐतिहासिक उच्च" स्तर पर पहुँच गया है, जिसके चलते डीलरों के पास 790,000 वाहनों का स्टॉक रह गया है, जिसकी कीमत 800 अरब रुपये है।

कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (सीएआईटी) के महासचिव प्रवीण खंडेलवाल ने दावा किया कि ऊंची मुद्रास्फीति के बावजूद भारतीय उपभोक्ताओं ने इस दिवाली सीजन में अपनी जेबें खोल दीं, जिससे त्योहार से संबंधित खर्च करीब 1.25 लाख करोड़ रुपये हो गया। उन्होंने कहा कि अकेले दिल्ली में 25,000 करोड़ रुपये खर्च हुए, जिसमें एफएमसीजी सामान, उपभोक्ता टिकाऊ सामान और घर की सजावट के लिए मिट्टी के दीये और इलेक्ट्रॉनिक सामान, पारंपरिक और आधुनिक उत्पाद शामिल हैं।

20,000 रुपये से कम कीमत वाले मोबाइल फोन की बिक्री में तेज़ी देखी गई। इस सीजन में मोबाइल फोन सबसे ज़्यादा बिकने वाले फोन में से रहे, औसत बिक्री मूल्य में 12-15 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो आंशिक रूप से डिवाइस की उपलब्धता में कमी के कारण हुआ। इस कमी के कारण उपभोक्ताओं ने जो भी स्टॉक उपलब्ध था, उसे खरीद लिया, जिससे बिकने वाले फोन की औसत कीमत बढ़ गई।

वैश्विक स्तर पर अस्थिर युद्ध जैसी स्थिति के बीच सोने और कमोडिटी की बढ़ती कीमतें, रुपए के मूल्य में गिरावट, आय और विनिर्माण में कमी चिंता का विषय हैं।

****

लेखक : वरिष्ठ पत्रकार एवं मीडिया गुरु हैं।

ऊर्जा परिवर्तन और एक अच्छे भविष्य का मार्ग

राजीव माथुर

"ऊर्जा संक्रमण" शब्द का अर्थ ऊर्जा के उत्पादन, वितरण और उपभोग के तरीके में एक मौलिक परिवर्तन है। वर्तमान में, वैश्विक ऊर्जा प्रणाली जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए संधारणीय ऊर्जा की ओर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजर रही है। यह बदलाव, जिसे अक्सर "नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण" कहा जाता है, मुख्य रूप से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और

ऊर्जा परिवर्तन: एक आवश्यक कदम

ऊर्जा परिवर्तन का मतलब है ऊर्जा उत्पादन, वितरण और उपभोग के तरीके में मौलिक बदलाव। वर्तमान में, नवीकरणीय ऊर्जा की ओर बढ़ना जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने का एक महत्वपूर्ण कदम है, जो जीवाश्म ईंधन की जगह ले रहा है।

एक संधारणीय भविष्य बनाने के लिए जीवाश्म ईंधन को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से बदलने पर केंद्रित है।

ऐतिहासिक रूप से, औद्योगिक क्रांति के दौरान एक उल्लेखनीय ऊर्जा परिवर्तन हुआ, जब कोयले ने लकड़ी और बायोमास की जगह ली, उसके बाद तेल और प्राकृतिक गैस ने। आज, वैश्विक ऊर्जा की तीन-चौथाई से अधिक मांग जीवाश्म ईंधन को जलाकर पूरी की जाती है, जो मानव-जनित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में प्राथमिक योगदानकर्ता है। इस मुद्दे को संबोधित करना 2015 के पेरिस समझौते के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है, जिसका उद्देश्य वैश्विक तापमान को सीमित करना और सदी के मध्य तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करना है।

2010 के दशक के अंत से पवन और सौर ऊर्जा की लागत में तेज़ी से गिरावट के कारण वर्तमान अक्षय ऊर्जा संक्रमण ने गति पकड़ी है। सौर ऊर्जा की लागत में 85%, पवन ऊर्जा में 55% और लिथियम-आयन बैटरी की लागत में 85% की गिरावट आई है, जिससे ये तकनीकें कई क्षेत्रों में नए प्रतिष्ठानों के लिए सबसे किफायती विकल्प बन गई हैं। 2021 में, दुनिया भर में नव स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता में अक्षय ऊर्जा का योगदान 80% से अधिक था।

नवीकरणीय ऊर्जा की बढ़ती क्षमता
सौर और पवन ऊर्जा की लागत में 85% तक की गिरावट ने इन्हें किफायती बना दिया है, जिससे 2021 में दुनिया में नव स्थापित बिजली क्षमता का 80% हिस्सा अक्षय ऊर्जा का था।

ऊर्जा परिवर्तन के प्रमुख चालक

1. डीकार्बोनाइजेशन: इस बदलाव का उद्देश्य जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करके और कम कार्बन वाली बिजली को अपनाकर ऊर्जा प्रणालियों को कार्बन मुक्त करना है। इसके लिए हीटिंग और परिवहन जैसी प्रक्रियाओं को बिजली पर चलाने की आवश्यकता है, जिसे सौर और पवन जैसे नवीकरणीय स्रोतों से उत्पन्न किया जा सकता है। हीट पंप और इलेक्ट्रिक वाहनों को

अपनाने सहित विद्युतीकरण के प्रयास इस बदलाव के केंद्र में हैं।

2. नवीकरणीय ऊर्जा और भंडारण: पवन और सौर ऊर्जा इस बदलाव की आधारशिला हैं, जिनमें शुद्ध कार्बन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी लाने की क्षमता है। हालांकि, उच्च लागत के बावजूद, जैव ऊर्जा, भूतापीय और ज्वारीय ऊर्जा जैसे अन्य स्रोत भी इस मिश्रण का हिस्सा हैं। इन प्रयासों की सफलता ऊर्जा भंडारण समाधानों और सुपर ग्रिड के विकास के माध्यम से विद्युत ग्रिड लचीलेपन में सुधार पर निर्भर करती है।

3. ऊर्जा दक्षता: ऊर्जा दक्षता बढ़ाना इस बदलाव का एक और

> ऊर्जा दक्षता और भंडारण की भूमिका
>
> ऊर्जा परिवर्तन में ऊर्जा दक्षता और भंडारण समाधानों का महत्व है। पवन और सौर ऊर्जा के साथ-साथ ऊर्जा भंडारण तकनीकें विद्युत ग्रिड की लचीलापन में सुधार करने में मदद करती हैं।

महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें ऐसी तकनीकें और अभ्यास अपनाना शामिल है जो ऊर्जा खपत को कम करते हुए उत्पादन को बनाए रखें।

सामाजिक-आर्थिक लाभ और चुनौतियाँ

ऊर्जा परिवर्तन जलवायु परिवर्तन शमन से परे कई लाभ प्रदान करता है।

यह सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है, रोजगार पैदा कर सकता है और ऊर्जा की पहुँच बढ़ा सकता है। उदाहरण के लिए, कोयला बिजली संयंत्रों को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से बदलने से प्रति मेगावाट स्थापित क्षमता में दोगुने से अधिक रोजगार सृजन हो सकता है। 2050 तक, संक्रमण से 200 मिलियन रोजगार पैदा होने का अनुमान है जबकि 185 मिलियन लोग विस्थापित होंगे, मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन और संबंधित क्षेत्रों में।

हालांकि, यह बदलाव चुनौतियों से रहित नहीं है। शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन की आवश्यकता होगी। 2021 से 2050 तक, ऊर्जा और भूमि-उपयोग प्रणालियों के लिए भौतिक परिसंपत्तियों में अनुमानित $275 ट्रिलियन या $9.2 ट्रिलियन प्रति वर्ष निवेश करने की आवश्यकता होगी। यह खर्च में पर्याप्त वृद्धि दर्शाता है, जो वैश्विक कॉर्पोरेट मुनाफे के आधे या कुल कर राजस्व के एक-चौथाई के बराबर है।

इस खर्च को "फ्रंट-लोडेड" होना

> ऊर्जा परिवर्तन के सामाजिक-आर्थिक लाभ
> ऊर्जा संक्रमण से न केवल जलवायु परिवर्तन पर काबू पाया जा सकता है, बल्कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार सृजन और ऊर्जा पहुंच में वृद्धि भी कर सकता है, हालांकि इसके साथ चुनौतियां भी जुड़ी हैं।

चाहिए, जो 2026 और 2030 के बीच वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के 8.8% तक बढ़ जाना चाहिए, उसके बाद इसमें कमी आनी चाहिए। हालांकि ये लागतें काफी हैं, लेकिन ये एक टिकाऊ भविष्य में निवेश हैं। तकनीकी प्रगति इन लागतों को अपेक्षा से अधिक तेज़ी से कम कर सकती है, जिससे नवीकरणीय ऊर्जा की कम परिचालन लागत के कारण समय के साथ बिजली की वैश्विक औसत लागत में संभावित रूप से कमी आ सकती है।

क्षेत्रीय एवं क्षेत्रीय प्रभाव

यह परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों और क्षेत्रों पर असमान रूप से प्रभाव डालेगा। स्टील और सीमेंट जैसे उच्च-उत्सर्जन उद्योगों को उत्पादन लागत

में वृद्धि का सामना करना पड़ेगा, हालांकि कम कार्बन वाले उत्पादों और सेवाओं के लिए बाजार का विस्तार होगा। 2050 तक बिजली की मांग दोगुनी से अधिक होने की उम्मीद है, जिसके लिए बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होगी।

विकासशील देशों और जीवाश्म ईंधन पर निर्भर अर्थव्यवस्थाओं को अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन साथ ही अवसर भी मिलते हैं। इन देशों को कम कार्बन वाले बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में जीडीपी के प्रतिशत के रूप में काफी अधिक निवेश करने की आवश्यकता हो सकती है। हालांकि, वे आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए अपने प्राकृतिक संसाधनों, जैसे सौर ऊर्जा क्षमता और मानव पूंजी का लाभ उठा सकते हैं।

सरकारों और व्यवसायों की भूमिका

ऊर्जा संक्रमण को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए सरकारों, व्यवसायों और वित्तीय संस्थानों के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता होगी। सरकारें प्रोत्साहन स्थापित कर सकती हैं, विनियामक सहायता प्रदान कर सकती हैं और कमजोर हितधारकों की रक्षा कर सकती हैं। व्यवसायों को सामूहिक कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिए उद्योग के साथियों और आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ सहयोग करते हुए अपनी रणनीतियों, वित्त और संचालन में जलवायु संबंधी विचारों को एकीकृत करना चाहिए।

वित्तीय संस्थाएँ उच्च-उत्सर्जन से निम्न-उत्सर्जन परिसंपत्तियों में पूंजी का पुनर्वितरण करके तथा नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों की बड़े पैमाने पर तैनाती का समर्थन करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बहुपक्षीय संस्थाएँ असमान प्रभावों को प्रबंधित करने तथा वैश्विक सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए मानक, ट्रैकिंग तंत्र तथा सर्वोत्तम अभ्यास स्थापित करने में सहायता कर सकती हैं।

> सरकारों और व्यवसायों की जिम्मेदारी
> ऊर्जा परिवर्तन को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सरकारों, व्यवसायों और वित्तीय संस्थानों के समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। सभी को जलवायु लक्ष्यों की ओर काम करने के लिए रणनीतियों और सहयोग को प्राथमिकता देनी होगी।

देरी के जोखिम

विलंबित या खराब तरीके से प्रबंधित संक्रमण के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक लागतें हो सकती हैं, जिसमें फंसी हुई संपत्तियां, नौकरी में अव्यवस्था और सार्वजनिक प्रतिक्रिया शामिल हैं। इसके विपरीत, एक व्यवस्थित संक्रमण जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभावों के खिलाफ विकास, नवाचार और लचीलेपन के अवसर प्रस्तुत करता है।

ऊर्जा परिवर्तन एक आवश्यकता और अवसर दोनों है। जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों को कम करना, पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करना और एक स्थायी भविष्य को सुरक्षित करना आवश्यक है। एकीकृत प्रयासों, तकनीकी प्रगति और रणनीतिक निवेशों के साथ, यह परिवर्तन आर्थिक विकास को गति दे सकता है, रोजगार पैदा कर सकता है और ग्लोबल वार्मिंग के जोखिम को कम कर सकता है। कार्य करने का समय अभी है, क्योंकि आज लिए गए निर्णय भविष्य की ऊर्जा प्रणालियों और अर्थव्यवस्थाओं को आकार देंगे।

****

लेखक मीडिया मैप के ब्यूरो प्रमुख हैं।

ट्रम्प की वापसी: 2025 एजेंडा में अर्थव्यवस्था की बहाली और पूर्वी यूरोप का पुनर्निर्माण।

गोपाल मिश्रा

युद्ध के कारण तबाह हो चुके यूक्रेन के पुनर्निर्माण और शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए विश्व बैंक, यूरोपीय आयोग और संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि अगले दशक में 486 बिलियन अमेरिकी डॉलर की जरूरत होगी। इस राशि का उपयोग उन करीब 6 मिलियन शरणार्थियों के पुनर्वास में किया जाएगा, जो यूरोप और अमेरिका सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में शरण ले रहे हैं। यह आंकड़ा यूक्रेन की वर्तमान सकल घरेलू उत्पाद का करीब 2.8 गुना है, जो पुनर्निर्माण की कठिनाई और चुनौती को स्पष्ट करता है।

> यूक्रेन का पुनर्निर्माण: एक विशाल चुनौती
> विश्व बैंक और संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि अगले दशक में यूक्रेन के पुनर्निर्माण और शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए 486 बिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी। यह राशि यूक्रेन की सकल घरेलू उत्पाद का 2.8 गुना है, जो युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण की कठिनाइयों को स्पष्ट करती है।

2025 में ट्रम्प प्रशासन की वापसी के साथ शांति बहाली की उम्मीद की जा रही है, हालांकि संघर्ष को समाप्त करना आसान नहीं होगा, खासकर मौजूदा भू-राजनीतिक माहौल में। लंबे समय से यह स्पष्ट है कि अमेरिका रूस-यूक्रेन संघर्ष को समाप्त करने में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखा रहा है। इसके पीछे औद्योगिक-सैन्य जटिलता और अमेरिकी हथियार निर्माताओं का प्रभाव माना जाता है, जो पहले ही अमेरिकी खजाने से अरबों डॉलर के हथियार यूक्रेन को भेज चुके हैं। डोनाल्ड ट्रम्प की प्रतिद्वंदी कमला हैरिस को हथियार निर्माताओं की ओर से चुनावी अभियान में 2.5 बिलियन डॉलर का सहयोग मिला था, जबकि ट्रम्प के समर्थक इस दौड़ में बहुत कम सहयोग जुटा पाए।

चुनावी संघर्ष में डोनाल्ड ट्रम्प और कमला हैरिस के बीच तीव्र कटुता देखी गई, जिसमें ट्रम्प के खिलाफ हत्या के प्रयास, गलत सूचनाओं का प्रचार, और कानूनी मामलों में उन्हें उलझाने का प्रयास शामिल था। ट्रम्प के पिछले कार्यकाल में उन पर और उनके सहयोगियों पर रूस के साथ मिलीभगत के आरोप लगे थे, लेकिन विशेष वकील रॉबर्ट मुलर की जांच में उन्हें बरी कर दिया गया।

ट्रम्प की जीत को एक 'छोटी क्रांति' के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि उनके प्रशासन में अमेरिका की भूमिका में बदलाव की उम्मीद है। वे अपनी अर्थव्यवस्था की बेहतरी पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, जो हाल के दशकों में संघर्षों को बढ़ावा देकर काफी हद तक प्रभावित हुई है। अमेरिकी प्रशासन ने समय-समय पर विश्व में संघर्षों को बढ़ावा दिया है, जिससे उसके हथियार उद्योग को फायदा पहुंचा है। इस नीति को बदलना किसी भी अमेरिकी प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती होगी, और ट्रम्प के लिए भी यह आसान नहीं होगा। लेकिन उन्होंने अपने चुनावी अभियान के

> ट्रम्प प्रशासन की वापसी और शांति की उम्मीद
> 2025 में डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति पद पर वापसी से यूक्रेन संघर्ष को समाप्त करने की उम्मीदें जाग रही हैं। हालांकि, संघर्ष खत्म करना आसान नहीं होगा, क्योंकि अमेरिका की औद्योगिक-सैन्य जटिलताओं और हथियार निर्माताओं के प्रभाव के कारण यह कार्य चुनौतीपूर्ण रहेगा।

दौरान इस दिशा में बड़े सुधारों का वादा किया है।

डोनाल्ड ट्रम्प का एजेंडा रूस और यूक्रेन के बीच शांति स्थापित करना और पश्चिम एशिया से लेकर बांग्लादेश तक कट्टरपंथी इस्लाम को मिलने वाले वित्तीय समर्थन को कम करना शामिल है। यह एक कठिन कार्य है, जिसमें पाकिस्तान की सैन्य व्यवस्था को मिलने वाले समर्थन को भी शामिल किया गया है। ट्रम्प एक कुशल व्यवसायी हैं और पुनर्वास परियोजनाओं के लिए उनके पास वैश्विक निर्माण व्यवसाय का अनुभव है। वे अमेरिकी कंपनियों को हथियारों के निर्माण से हटाकर संघर्ष-प्रभावित क्षेत्रों के पुनर्वास कार्यों में लगा सकते हैं।

> अमेरिकी हथियार उद्योग और यूक्रेन के लिए मदद
>
> अमेरिका, रूस के खिलाफ यूक्रेन को सैन्य सहायता दे रहा है, लेकिन युद्ध प्रभावित लोगों को और अधिक मानवीय सहायता की आवश्यकता है। अमेरिकी हथियार कंपनियां, जैसे लॉकहीड मार्टिन और बोइंग, ने 2023 में 592 बिलियन डॉलर का कारोबार किया, जो इस उद्योग की व्यापकता को दर्शाता है।

फिलहाल, यूक्रेन को सबसे ज्यादा समर्थन यूरोपीय संघ से मिल रहा है, जो उसे मानवीय और आर्थिक सहायता दे रहा है। अमेरिका, रूस के खिलाफ यूक्रेन को सैन्य सहायता प्रदान कर रहा है, लेकिन युद्ध प्रभावित लोगों को और अधिक मानवीय सहायता की जरूरत है। अमेरिकी हथियार उद्योग, जिसमें मुख्य रूप से लॉकहीड मार्टिन, रेथियॉन टेक्नोलॉजीज, और बोइंग जैसी कंपनियां शामिल हैं, ने 2023 में 592 बिलियन डॉलर का कारोबार किया है। अकेले लॉकहीड मार्टिन ने पिछले दो वर्षों में 60.34 बिलियन डॉलर के हथियार बेचे हैं, जो इन कंपनियों के प्रभाव को दर्शाता है।

अपने पिछले कार्यकाल में ट्रम्प ने पश्चिम एशिया में अब्राहम समझौते के जरिए इजरायल और अरब देशों को शांति प्रक्रिया की ओर बढ़ने में मदद की थी। इन समझौतों के पीछे उनका उद्देश्य यहूदी, ईसाई और इस्लाम धर्मों की साझा जड़ों को समझाते हुए आपसी सहयोग को बढ़ावा देना था। लेकिन जो बाइडेन के राष्ट्रपति बनने के बाद ट्रम्प इस शांति एजेंडे को आगे नहीं बढ़ा सके। बाइडेन ने अमेरिका की विदेश नीति को एक नई दिशा दी, लेकिन शांति को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका कम मानी गई।

वर्तमान चुनाव में बाइडेन की जगह कमला हैरिस को प्रमुख उम्मीदवार के रूप में पेश किया गया, लेकिन ट्रम्प ने उन्हें हराकर शांति बहाली की दिशा में अपने एजेंडे को दोबारा उठाने का अवसर प्राप्त किया है। उम्मीद है कि यूक्रेन के पुनर्निर्माण के प्रयासों में दुनिया भर के रियल एस्टेट डेवलपर्स को अवसर मिलेंगे, खासकर भारत और चीन जैसे देशों में। चीन ने हाल ही में निर्माण सामग्री की नई श्रृंखला पेश की है, जिसे वह यूक्रेन के पुनर्निर्माण के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

> ग्लोबल सहयोग: सऊदी अरब और चीन का योगदान
>
> यूक्रेन के पुनर्निर्माण के प्रयासों में सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे तेल संपन्न देशों का सहयोग महत्वपूर्ण हो सकता है। इसके साथ ही, चीन ने निर्माण सामग्री की नई श्रृंखला पेश की है, जो पुनर्निर्माण कार्यों में उपयोग की जा सकती है, जिससे वैश्विक पुनर्निर्माण प्रयासों को गति मिल सकती है।

पुनर्निर्माण कार्यों के लिए फंडिंग जुटाने के लिए सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात जैसे तेल संपन्न खाड़ी देशों से सहयोग की संभावना है। यह वैश्विक पुनर्निर्माण के प्रयासों को गति दे सकता है और युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में शांति लाने में सहायक हो सकता है।

****

लेखक : वरिष्ठ पत्रकार एवं पत्रकारिता शिक्षक हैं।

ट्रम्प की जीत सिद्धांत और नैतिकता की राजनीति के लिए एक झटका

डॉ. सतीश मिश्रा

नवंबर 5 को राष्ट्रपति पद के चुनाव में रिपब्लिकन डोनाल्ड ट्रम्प की डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस पर निर्णायक जीत से बहुत महत्वपूर्ण सबक लिए जा सकते हैं, क्योंकि यह सिद्धांतों और नैतिकता की राजनीति की मृत्यु की तरह प्रतीत होता है।

अपराध और अपराधियों का उदय, छल और झूठ, न्याय प्रणाली का प्रबंधन, कमजोर और उत्पीड़ितों के प्रति घृणा, एकाधिकारवादी पूंजीवाद, अमीर-समर्थक, श्वेत-समर्थक, बड़े-बड़े वादे करके भ्रम पैदा करना तथा सबसे पुराने लोकतंत्र में पुरुष वर्चस्ववाद और महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह की दृढ़तापूर्वक पुनः पुष्टि, हाल ही में संपन्न अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की कुछ अन्य स्पष्ट विशेषताएं हैं।

जबकि राजनीति को दक्षिणपंथी दिशा में ले जाने का चलन दुनिया भर में है, यह अमेरिका में अधिक स्पष्ट और परेशान करने वाला है क्योंकि अमेरिका को दुनिया भर के उत्पीड़ित, राजनीतिक रूप से सताए गए और महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के लिए एक स्वप्निल गंतव्य के रूप में माना जाता था। साथ ही, दुनिया के सबसे पुराने लोकतंत्र और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के बीच दिलचस्प समानताएँ मौजूद हैं।

ऐसा लगता है कि अमेरिकी मतदाताओं का बहुमत अपराध और अपराधियों को नज़रअंदाज़ करने के लिए तैयार है, इस प्रकार अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शों को नकारने के बजाय अमेरिकी क्रांति कहा जाता है जो ब्रिटिश उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ़ था और एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए था। अमेरिकी क्रांति फ्रांसीसी क्रांति के स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के वादे से प्रेरित थी। यह स्पष्ट है कि निर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को 34 गुंडागर्दी के आरोपों में दोषी पाया गया और अमेरिका के सर्वोच्च कार्यकारी पद पर एक अपराधी को चुना गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि अपराध लंबे समय में बहुत फ़ायदेमंद होता है, बशर्ते कोई न्याय प्रणाली का प्रबंधन कर सके या इसे अपने फ़ायदे के लिए मोड़ सके।

> डोनाल्ड ट्रम्प की हालिया जीत ने अमेरिकी राजनीति में सिद्धांतों और नैतिकता की राजनीति को खत्म करने का संकेत दिया। अपराधियों का उभार, झूठी घोषणाओं और श्वेत वर्चस्व की नीतियों ने चुनाव परिणाम को प्रभावित किया। यह चुनाव अमेरिका के इतिहास और मूल्यों की जड़ें हिला देने वाला साबित हुआ है, और समाज के कमजोर वर्गों के लिए चिंता का विषय बना है।

संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास, 1776 में इसके निर्माण के बाद से, जब 13 अमेरिकी उपनिवेशों ने ग्रेट ब्रिटेन से स्वतंत्रता की घोषणा की, आप्रवासियों का रहा है जिसमें सभी महाद्वीपों के लोग शामिल थे जिन्होंने अमेरिका को अग्रणी राष्ट्र और महाशक्ति बनाया, लेकिन चुनावी परिणाम एक अप्रवासी विरोधी प्रवृत्ति को दर्शाता है और दिखाता है कि श्वेत वर्चस्व ने निर्णायक रूप से मतदान व्यवहार को प्रभावित किया है जिससे ट्रम्प को बहुत लाभ हुआ है।

नया रूम्प प्रशासन निश्चित रूप से अपनी नीतियों और कार्यों के माध्यम से इन प्रवृत्तियों को मजबूत करने जा रहा है, जो भारतीयों सहित लाखों लोगों के सपनों पर पानी फेर रहा है जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए अमेरिकी तटों तक पहुँचने की आकांक्षा रखते हैं।

अमेरिका में, अफ्रीकी-अमेरिकी अश्वेतों और LGBTQ समुदाय जैसे

समाज के कमजोर और गरीब वर्ग ट्रम्प प्रशासन की श्वेत-समर्थक नीतियों के शिकार होने जा रहे हैं।

ट्रम्प की जीत का सबसे बड़ा और सबसे अशुभ झटका वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर चल रही वार्ता है। 11 नवंबर को अजरबैजान की राजधानी बाकू में शुरू हुई COP29 (जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के दलों का 29वां सम्मेलन) बैठक पर एक काली छाया मंडरा रही है - क्योंकि अमेरिका किसी भी सकारात्मक परिणाम को बाधित करने वाली वार्ता का विरोध करने जा रहा है। बैठक 22 नवंबर को समाप्त होने वाली है।

बाकू बैठक के समापन पर विकासशील देशों को 2023 और 2024 के सबसे गर्म वर्षों की पृष्ठभूमि में ग्लोबल वार्मिंग के हानिकारक प्रभावों से निपटने में मदद करने के लिए एक नए लक्ष्य पर सहमति बनने की उम्मीद थी। ग्लोबल वार्मिंग कार्बन डाइऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण होती है।

हालाँकि, हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के नतीजों में डोनाल्ड ट्रम्प की जीत ने इन वार्ताओं पर एक काली छाया डाल दी है। ट्रम्प की वापसी ने जलवायु वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और वैश्विक हितधारकों के बीच भय को फिर से जगा दिया है। उनके पिछले कार्यकाल (2017-21) में जलवायु परिवर्तन से जुड़े महत्वपूर्ण कदम उठाए गए थे, जिसमें पेरिस समझौते से वापसी भी शामिल थी - एक ऐसा कदम जिसे उन्होंने दोहराने का वादा किया है। संक्षेप में, ट्रम्प के आने से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से मानव अस्तित्व खतरे में पड़ गया है।

ट्रम्प के छल-कपट, झूठ और कठोर वास्तविकता से दूर सपने बुनने के गुण ऐसे हैं, जिनके कारण उन्होंने अमेरिकी मतदाताओं के एक बड़े हिस्से को गुमराह किया है। अमेरिका को फिर से महान बनाने के नारे ने उनकी जीत में बड़ी भूमिका निभाई है, लेकिन दुर्भाग्य से, उनके पास लक्ष्य हासिल करने के लिए कोई स्पष्ट रोडमैप नहीं है। वादे करना हमेशा से ही सत्तावादी नेताओं का पसंदीदा साधन रहा है और ट्रम्प भी इसका अपवाद नहीं हैं।

> ट्रम्प की वापसी ने वैश्विक जलवायु परिवर्तन वार्ता को संकट में डाल दिया है। उनके पिछले कार्यकाल में पेरिस समझौते से बाहर निकलने के कदम और अब उनके दोबारा सत्ता में आने से पर्यावरणीय संकट और भी गहरा सकता है। ट्रम्प का नकारात्मक रवैया जलवायु वैज्ञानिकों और वैश्विक हितधारकों में भय पैदा कर रहा है, जिससे मानव अस्तित्व पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं।

शैक्षिक उत्कृष्टता का अवमूल्यन और शैक्षिक डिग्रियों के प्रति अवमानना, ट्रम्प की जीत की एक और विशेषता है जिसे रेखांकित किया गया है।

ट्रम्प की सत्ता में वापसी का एक और नकारात्मक पहलू महिलाओं के अधिकारों और समाज में उनके स्थान से जुड़ा है। उनकी जीत गर्भपात के अधिकार के लिए एक गंभीर झटका है जिसका रिपब्लिकन और उसके पुरुष अनुयायी विरोध कर रहे हैं। ट्रम्प ने स्पष्ट रूप से कहा था कि वह संघीय गर्भपात प्रतिबंध पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे और राज्यों को अपनी नीतियाँ तय करनी चाहिए। नया ट्रम्प प्रशासन, सबसे अधिक संभावना है, गर्भपात प्रतिबंध को स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित किए बिना पूरे देश में प्रतिबंधित कर देगा। नई प्रशासन नीतियाँ प्रजनन न्याय पर प्रतिकूल प्रभाव डालने जा रही हैं।

ट्रम्प की जीत की सबसे चौंकाने वाली बल्कि भयावह विशेषता यह है कि अमेरिकी मतदाताओं ने 20 महिलाओं के साथ उनके कथित यौन दुराचार को नज़रअंदाज़ करने के बजाय अनदेखा करने का फ़ैसला किया। अमेरिकी समाज एक ऐसे व्यक्ति का सम्मान करने के लिए तैयार है जिसकी ईमानदारी और निष्ठा को चुनौती दी गई है और जिस पर सवाल उठाए गए हैं।

****

लेखक मीडिया मैप के संयुक्त सम्पादक हैं।

क्या पंजाब में भाजपा का "बाहरी " उम्मीदवार उतारने का प्रयोग विफल रहा ?

प्रभजोत सिंह

क्या भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व द्वारा हाल के चुनावी मुकाबलों में अपने कैडर के मुकाबले 'आयातित' उम्मीदवारों को तरजीह देने का प्रयोग वांछित परिणाम देने में विफल रहा है?

सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) ने चार सीटों में से तीन - डेरा बाबा नानक, चब्बेवाल और गिद्दड़बाहा - जीतीं, जबकि चौथी सीट - बरनाला - कांग्रेस ने जीती। डेरा बाबा नानक और गिद्दड़बाहा दोनों पहले कांग्रेस के पास थे, जबकि आप उम्मीदवार और अब सांसद गुरमीत सिंह मीत हायर बरनाला का प्रतिनिधित्व करते थे। 2022 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर छब्बेवाल से जीतने वाले डॉ राज कुमार छब्बेवाल भी आप में शामिल होने के बाद लोकसभा के लिए चुने गए। उनके बेटे इशांत ने अब आप के उम्मीदवार के रूप में उपचुनाव जीता है।

अगर हाल ही में संपन्न हुए चार उपचुनावों के नतीजों को कोई संकेत माना जाए तो भाजपा की पंजाब इकाई इस साल कोई भी चुनावी सफलता दर्ज करने में विफल रही है। अपने पारंपरिक सहयोगी शिरोमणि अकाली दल के साथ गठबंधन टूटने के बाद, इस सीमावर्ती राज्य में हाल ही में हुए चुनावों में उसे कोई बड़ी सफलता नहीं मिली है।

कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल समेत अन्य दलों से सिख नेताओं को लुभाने की इसकी रणनीति सफल रही। लेकिन राज्य के चुनावी मुकाबलों में "आयातित" सिख चेहरों का इस्तेमाल करके अपनी पैठ मजबूत करने की रणनीति का दूसरा और अंतिम हिस्सा "बुरी तरह" विफल रहा।

2024 के आम चुनावों में भाजपा ने अमृतसर से हाल ही में सेवानिवृत्त हुए राजनयिक तरनजीत सिंह संधू, बठिंडा से नौकरशाह से राजनेता बनी परमजीत कौर सिद्धू, खडूर साहिब से मनजीत सिंह मन्ना, फिरोजपुर से कांग्रेस से "आयातित" राणा गुरमीत सिंह सोढ़ी, लुधियाना से रवनीत सिंह बिट्टू और पटियाला से परनीत कौर को मैदान में उतारा। इतना ही नहीं, सूफी गायक हंस राज हंस समेत भाजपा के बाकी सभी उम्मीदवार 2024 के लोकसभा चुनावों में हार गए।

> भा.ज.पा. की 'आयातित' उम्मीदवारों की हार
> पंजाब के हालिया उपचुनावों में भाजपा की 'आयातित' सिख उम्मीदवारों की रणनीति बुरी तरह विफल रही। सभी उम्मीदवार न केवल हार गए, बल्कि वे तीसरे स्थान पर रहे। यह भाजपा के लिए एक चेतावनी है कि राज्य में अपनी जमीन मजबूत करने के लिए पारंपरिक नेतृत्व और रणनीतियों की आवश्यकता है।

भाजपा नेतृत्व ने रवनीत सिंह बिट्टू की नव-प्रदर्शित निष्ठा को पुरस्कृत किया, जो लुधियाना लोकसभा सीट पर अपने कांग्रेस सहयोगी राजा अमरिंदर सिंह वड़िंग से हार गए थे, उन्हें केंद्रीय मंत्रिपरिषद में मनोनीत किया और बाद में उन्हें राजस्थान से राज्यसभा में भेजा।

पंजाब में लोकसभा चुनाव में हार के बाद भाजपा की मुश्किलें खत्म नहीं हुईं, बल्कि उसके बाद हुए उपचुनावों में भी भाजपा उम्मीदवारों को धूल चाटनी पड़ी।

पंजाब में हाल ही में संपन्न हुए 4 उपचुनावों में, जहां भाजपा ने सभी "आयातित" सिख उम्मीदवारों को खड़ा किया था, वह त्रिकोणीय मुकाबले में तीसरे स्थान पर रही, क्योंकि एक समय में प्रमुख और सबसे पुराना क्षेत्रीय राजनीतिक संगठन, शिरोमणि अकाली दल, उपचुनावों से दूर रहा, जिसके कारण लोकसभा के लिए मौजूदा विधायकों का उपचुनाव आवश्यक हो गया।

भाजपा ने पंजाब के पूर्व स्पीकर और अकाली दल के नेता निर्मल सिंह काहलों के बेटे रविकिरण काहलों को बाबा बकाला से, शिरोमणि अकाली दल के पूर्व मंत्री सोहन सिंह ठंडल को छबेवाल से, पूर्व कांग्रेस विधायक केवल ढिल्लों को बरनाला से और प्रकाश सिंह बादल अकाली सरकार में पंजाब के पूर्व वित्त मंत्री और बाद में कांग्रेसी रहे मनप्रीत सिंह बादल को बादलों के पारंपरिक गढ़ गिद्दड़बाहा से मैदान में उतारा। एक बार फिर, सभी "आयातित" भाजपा उम्मीदवार न केवल हार गए, बल्कि अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में तीसरे स्थान पर भी रहे। उपचुनावों ने पंजाब की राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया है, क्योंकि एक समय सत्ता में रहे भाजपा-शिअद गठबंधन के दोनों सहयोगी हाशिये पर चले गए हैं।

****

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं , खेल कूद पत्रकार्ता में उनकी विशेष रूचि है और उन्होंने सात ओलिंपिक कवर किये है। खेल - कूद के साथ ही वे व्यापर , वित्त , स्वास्थ्य, विमानन और सिख-पंजाब राजनीति के भी विशेषज्ञ माने जाते हैं।

क्या 'बंटोगे तो कटोगे' नारे ने मतदाताओं को प्रभावित किया ?

ज़ेबा हसन

बंटोगे तो कटोग.. यूपी उपचुनाव 2024 की वोटिंग से ऐन पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा कहे गए इन शब्दों की चर्चा आज हर तरफ हो हरी है। 23 नवम्बर को आए उपचुनाव के नतीजों ने एक बार फिर बीजेपी को हुंकार भरने का बल दे दिया है। उत्तर प्रदेश की नौ विधान सभा सीटों पर हुए इस मुकाबले में 6 सीटों पर बीजेपी ने जीत दर्ज की है जबकि दो सीटों पर समाजवादी पार्टी ने कब्जा किया। इसके अलावा रालोद ने अपने हिस्से की एक सीट की जीत दर्ज कर ली है। उपचुनाव में मायावती की बसपा को बड़ा झटका लगा है। इस चुनाव के अप्रत्याशित नतीजे आने के बाद से यही चर्चा है कि इस उलटफेर में योगी के नारे ने ट्रम्प कार्ड जैसा काम किया है? बता दें, यूपी की नौ विधानसभा सीटों पर 20 नवंबर को मतदान हुआ था। नौ सीटों के उपचुनाव में 49.30 प्रतिशत मतदान हुआ। वर्ष 2022 के आम चुनावों से इस बार सभी नौ सीटों पर मतदान कम हुआ था। चार सीटें ऐसी रहीं, जहां 50 प्रतिशत से भी कम वोट पड़े थे। कुछ स्थानों पर झड़प व पथराव भी हुआ था। कुंदरकी विधानसभा क्षेत्र में सबसे अधिक 57.72 प्रतिशत व गाजियाबाद विधानसभा क्षेत्र में सबसे कम 33.30 प्रतिशत मतदान हुआ था।

उपचुनाव योगी के लिए चैलेंज था

सबसे ज्यादा 80 लोकसभा सीटों वाला उत्तर प्रदेश देश की राजनीति में अहम भूमिका निभाता है। 2019 में भजपा ने यूपी को फतह करने के बाद इस प्रदेश की कमान योगी आदित्यनाथ के हाथ में दी। हलांकि कुछ मतभेदों के बाद योगी के नाम पर मुहर लगी थी। और पांच साल बाद 2019 में चुनावों के बाद योगी आदित्यनाथ ने दोबारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर कमान संभाली। योगी के नाम पर शुरू से चला आ रहा पार्टी में मतभेद आज भी चल रहा है और अप्रैल 2024 में हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली हार के बाद से योगी की कुर्सी पर खतरे के बादल और ज्यादा मंडरा रहे थे। लोगसभा चुनाव में कंग्रेस और सपा का जादू पूरे उत्तर प्रदेश में चला था। भजपा के गढ़ कहे जाने वाले क्षेत्रों में सपा और कांग्रेस ने जीत हासिल की थी। इस हार के बाद योगी के कई फरमानों पर सवाल उठने लगे थे और हार का ठीकरा योगी की कुछ नीतियों के सिर फोड़ा जा रहा था। फिर वह चाहे बुलडोजर नीति हो या फिर इंनकाउंटर। यही वजह है कि लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी को मिली हार के बाद यह उपचुनाव योगी के लिए किसी चुनौती से कम नहीं था।

> मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नारे "बंटोगे तो कटोगे" ने यूपी उपचुनाव 2024 में बीजेपी की जीत को धार दी। नौ विधानसभा सीटों में छह पर भाजपा ने कब्जा जमाया, जबकि सपा ने दो और रालोद ने एक सीट जीती। बसपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। मुख्यमंत्री योगी ने स्वयं चुनावी रणनीति की कमान संभालते हुए 9 जनसभाएं कीं और 30 मंत्रियों को प्रचार में लगाया। यह जीत उनके नेतृत्व की मजबूती का संकेत देती है, खासकर लोकसभा चुनाव 2024 में हार के बाद उनके लिए यह उपचुनाव एक बड़ी चुनौती थी।

झोंक दी थी ताकत

यूपी उपचुनाव में जीत दर्ज करने के पीछे योगी आदित्यनाथ की रणनीति और मेहनत दोनों का असर देखा गया है। विधानसभा उपचुनाव की कमान मुख्यमंत्री योगी ने खुद अपने हाथों में ले रखी थी। उन्होंने सभी नौ विधानसभा सीटों फूलपुर कटेहरी कुंदरकी गाजियाबाद खैर करहल सीसामऊ व मझवां

और मीरापुर में 30 मंत्रियों को प्रभारी मंत्री के रूप में तैनात किया था। सभी प्रभारी मंत्रियों ने संबंधित विधानसभा सीटों पर जाकर काम किया। सीएम योगी ने 3 दिन में 9 जनसभाएं करीं तो कई मंत्रियों को भी अलग-अलग सीटों पर प्रचार करने की जिम्मेदारी दी गई। इनमें डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक ने भी जनसभाएं कीं। वहीं योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में संपन्न हुए हरियाणा विधानसभा चुनावों के दौरान 'बंटोगे तो कटोगे' का नारा दिया था जो ना सिर्फ उत्तर प्रदेश में हिट हुआ बल्कि झारखंड और महाराष्ट्र में भी छाया रहा। भारतीय जनता पार्टी लखनऊ कार्यालय के बाहर लगे पोस्टर हो या फिर पूरे राज्य के मार्गों में लगे हुए पार्टी के बैनर हर जगह यही लिखा नजर आ रहा है। और इसका असर भी चुनाव के नतीजों में साफ नजर आया।

कहा हो गई चूक

इन चुनावों में एग्जिटपोल भी भ्रमित ही नजर आ रहे थे। इसकी सबसे बड़ी वजह थी गुजरे लोकसभा चुनाव में बीजेपी की सीटों का हाथ से जाना और कांग्रेस और सपा की बढ़त। सियासी दल इस चुनाव को 2027 में प्रस्तावित यूपी के विधानसभा चुनाव सेमीफाइनल के तौर पर देख रहे हैं थे। सपा के लिए एक बड़ा सवाल खड़ा हो चुका है कि आखिर कुछ ही महीनों में उनसे इस सियासी जंग में कहां चूक हो गई है। कुंदरकी सीट पर भाजपा के रामवीर सिंह ने 87 हजार वोटों से जीत दर्ज की है। 1993 के बाद यह पहला मौका है जब इस सीट पर किसी हिंदू प्रत्याशी ने जीत दर्ज की है। हालांकि चुनाव के नतीजे आने के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने अपने बयान में कहा कि अखिलेश यादव ने सपा के खराब प्रदर्शन पर कहा कि 'इलेक्शन' को 'करप्शन' का पर्याय बनानेवालों के हथकंडे तस्वीरों में क़ैद होकर दुनिया के सामने उजागर हो चुके हैं। दुनिया

> यूपी उपचुनाव 2024 में भाजपा की जीत और सपा की हार ने कई सवाल खड़े किए हैं। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने नतीजों पर सवाल उठाते हुए "इलेक्शन बनाम करप्शन" का मुद्दा उठाया। दूसरी ओर, बसपा ने खराब प्रदर्शन के बाद भविष्य में उपचुनाव न लड़ने की घोषणा की। मायावती ने ईवीएम में धांधली का आरोप लगाते हुए इसे लोकतंत्र के लिए खतरा बताया। यह उपचुनाव न केवल 2027 विधानसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जा रहा है, बल्कि राज्य की राजनीतिक दिशा भी तय कर रहा है।

से लेकर देश और उत्तर प्रदेश ने इस उपचुनाव में चुनावी राजनीति का सबसे विकृत रूप देखा। असत्य का समय हो सकता है लेकिन युग नहीं। अखिलेश ने आगे कहा कि अब तो असली संघर्ष शुरू हुआ है... बांधो मुट्ठी, तानो मुट्ठी और पीडीए का करो उद्घोष 'जुड़ेंगे तो जीतेंगे!'

बसपा अब नहीं लड़ेगी उपचुनाव

इस चुनाव में देखा जाय तो मायावती की पार्टी बसपा सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली पार्टी के रूप में सामने आई है। बसपा अपना खाता भी नहीं खोल पाई और हर सीट पर खराब प्रदर्शन् रहा। इस उपचुनाव में बसपा के उम्मीदवार सात क्षेत्रों में तीसरे स्थान पर रहे, जबकि दो सीट पर वे आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) और ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिममीन (एआईएमआईएम) के उम्मीदवारों से भी पीछे पांचवें स्थान पर रहे। चुनवी नतीजों के बाद जब मायावती ने बयान दिया तो यही कहा कि अब उनकी पार्टी कोई उपचुनाव नहां लड़ेगी। उपचुनाव में पार्टी को करारी शिकस्त मिलने के एक दिन बाद ही चुनाव में धांधली का आरोप लगाया और कहा कि अब उनकी पार्टी कोई उपचुनाव नहीं लड़ेगी। मायावती ने कहा कि पहले देश में बैलेट पेपर के जरिए चुनाव जीतने के लिए सत्ता का दुरुपयोग करके फर्जी वोट डाले जाते थे। अब तो ईवीएम के जरिए भी ये कार्य किया जा रहा है। ये हमारे देश और लोकतंत्र के लिए खतरे की बड़ी घंटी भी है। ऐसी स्थिति में जब तक देश में फर्जी वोटों को डालने से रोकने के लिए देश के चुनाव आयोग द्वारा कोई सख्त कदम नहीं उठाए जाते हैं, तब तक हमारी पार्टी देश में अब कोई भी उपचुनाव नहीं लड़ेगी।

****

लेखिका ने जागरण आईनेक्स्ट और उमर उजाला में पत्रकार के रूप में कार्य किया और एनबीटी में विशेष संवाददाता के रूप में अपनी सेवाएं दी। २०२० के बाद से वह फ्रीलांस पत्रकारिता कर रही है।

क्या बिहार में प्रशांत कौशिक वोट कटवा बनेंगे?

मीडिया मैप न्यूज़

पटना-बिहार विधानसभा उपचुनाव के नतीजे आरजेडी नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के लिए चेतावनी भरे हैं और उन्हें संदेश भी कि वे इस अंतर को समझें। आरजेडी ने तीन और सीपीआई-एमएल ने एक उम्मीदवार मैदान में उतारा था, लेकिन वे चारों सीटें एनडीए के हाथों हार गए। विधानसभा चुनाव 2020 में इन चार सीटों में से तीन सीटें आरजेडी के नेतृत्व वाले महागठबंधन ने जीती थीं।

चार विधानसभा सीटों बेलागंज, इमामगंज, तरारी और रामगढ़ में हार का अंतर 2020 के विधानसभा चुनाव परिणाम के अंतर जैसा है। राजद और उसके सहयोगी दल 2020 में 10 से 12 सीटों से चूक गए थे और उन्हें 2025 के विधानसभा चुनाव में सरकार बनाने के लिए उस अंतर को भरने के लिए एक रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है।

यहां यह याद दिलाना जरूरी है कि 2020 में तेजस्वी यादव के जबरदस्त प्रचार के बाद आरजेडी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी। अगर महागठबंधन को कुछ और सीटें मिल जातीं तो तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री बन सकते थे। उस चुनाव में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के उम्मीदवारों की हार में चिराग पासवान की अहम भूमिका थी। 2025 में भी इस बात की पूरी संभावना है कि चिराग पासवान एनडीए के सहयोगी बने रहेंगे और नीतीश कुमार के लिए कोई समस्या खड़ी नहीं करेंगे।

दूसरी ओर, 2025 में महागठबंधन को प्रशांत किशोर फैक्टर का सामना करना पड़ेगा। हालांकि तेजस्वी यादव आरजेडी को ए टू जेड पार्टी घोषित करने में अतिरिक्त सावधानी बरतते हैं, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि आरजेडी के कोर वोटर मुस्लिम और यादव (तथाकथित एमवाई समीकरण) हैं। यह एमवाई क्यों महत्वपूर्ण है, इसे इस तथ्य से समझा जा सकता है कि प्रशांत किशोर (पीके) तेजस्वी यादव पर हमला करते हुए मुसलमानों को आकर्षित करने की कोशिश करते हैं। मुस्लिम मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए, पीके किसी भी अन्य पार्टी की तुलना में अधिक मुसलमानों को मैदान में उतारने के लिए कहते हैं।

> बिहार उपचुनाव 2024 के नतीजे आरजेडी और तेजस्वी यादव के लिए खतरे की घंटी हैं। चार सीटों में से एक भी जीतने में विफल रहे महागठबंधन को अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करना होगा। बेलागंज और रामगढ़ जैसे गढ़ों में हार से साफ है कि कोर वोट बैंक खिसक रहा है। वहीं, प्रशांत किशोर और चिराग पासवान जैसे फैक्टर्स 2025 के चुनावी समीकरणों को और जटिल बना सकते हैं।

तेजस्वी को सबसे पहले अपने इस आधार वोट को बचाना होगा। बेलागंज सीट के नतीजे से तेजस्वी को इसका अहसास हो गया होगा। जानकारों का कहना है कि यहां राजद का आधार वोट नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू की तरफ खिसक गया। यह सीट राजद का गढ़ मानी जाती थी क्योंकि यहां से सुरेंद्र यादव तीन दशक से विधायक चुने जाते रहे थे। लेकिन लोकसभा चुनाव में जहानाबाद से सांसद चुने जाने के कारण यह सीट खाली हो गई।

उनके बेटे विश्वनाथ यादव को बेलागंज से आरजेडी उम्मीदवार के तौर पर उतारा गया था, लेकिन वे पीके की जन सूरज पार्टी के मोहम्मद अमजद और एआईएमआईएम के उम्मीदवार से मिले वोटों के अंतर से हार गए। आम धारणा है कि मोहम्मद अमजद को मिले वोट मुसलमानों के थे जो आरजेडी को मिल सकते थे। इसी तरह, एक रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि यादव वोट जेडी(यू) उम्मीदवार मनोरमा देवी को नहीं मिले, जो यादव परिवार से ताल्लुक रखती हैं।

तेजस्वी यादव के लिए राहत की बात यह है कि पीके के उम्मीदवार ने एनडीए के वोटों में भी सेंध लगाई है। इमामगंज में यह बात साबित हुई। गया लोकसभा सीट से जीतन राम मांझी के सांसद चुने जाने के बाद यह सीट खाली हुई थी। वे अपनी पार्टी हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्युलर) या हम (एस) के संरक्षक हैं। उन्होंने अपने बेटे और हम (एस) के प्रमुख संतोष मांझी की पत्नी दीपा कुमारी को इमामगंज सीट से मैदान में उतारा है।

> बिहार विधानसभा उपचुनाव में एनडीए ने चारों सीटों पर जीत दर्ज कर महागठबंधन को बड़ा झटका दिया। आरजेडी के गढ़ माने जाने वाले बेलागंज और रामगढ़ में हार से तेजस्वी यादव पर सवाल उठे हैं। प्रशांत किशोर और एआईएमआईएम के बढ़ते प्रभाव के बीच, महागठबंधन को कोर वोटर्स को बचाने और रणनीति मजबूत करने की जरूरत है। तेजस्वी के लिए यह नतीजे 2025 के लिए तैयारी का अलार्म हैं।

दीपा ने शुरुआत में पिछड़ने के बाद आखिरकार करीब छह हजार वोटों से जीत हासिल की। उन्हें 53435 वोट मिले और दूसरे नंबर पर रहे आरजेडी के रौशन मांझी को 47490 वोट मिले। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि एनडीए उम्मीदवार दीपा के लिए जन सुराज के जितेंद्र पासवान ने परेशानी खड़ी की, क्योंकि उन्हें 37103 वोट मिले। माना जा रहा है कि पासवानों ने जितेंद्र को वोट दिया, जबकि चिराग पासवान के एनडीए में होने के कारण पासवानों के वोट एनडीए की झोली में जाने का अनुमान था। लेकिन जाहिर तौर पर ऐसा नहीं हुआ।

आरजेडी के लिए बक्सर की रामगढ़ विधानसभा सीट का परिणाम चौंकाने वाला है, क्योंकि यह सीट उसके प्रदेश अध्यक्ष जगदनंत सिंह का गढ़ मानी जाती थी। बक्सर से लोकसभा सदस्य चुने जाने के बाद उनके बड़े बेटे सुधाकर सिंह ने इस सीट से इस्तीफा दे दिया था।

नतीजे चौंकाने वाले थे क्योंकि न सिर्फ़ आरजेडी उम्मीदवार और जगदानंद सिंह के छोटे बेटे अजीत कुमार सिंह चुनाव हार गए बल्कि वे तीसरे नंबर पर रहे. बहुजन समाज पार्टी ने यहां कड़ी टक्कर देकर सबको चौंका दिया. इसके उम्मीदवार सतीश कुमार सिंह यादव को 60895 वोट मिले और वे बीजेपी के अशोक कुमार सिंह से सिर्फ़ 1362 वोटों से चुनाव हार गए. जन सुराज के उम्मीदवार सुशील कुमार सिंह को 6513 वोट मिले और वे अपनी जमानत भी नहीं बचा पाए.

एनडीए ने महागठबंधन से बक्सर जिले की चौथी सीट तरारी पर कब्ज़ा किया था, जिसे 2020 में सीपीआई-एमएल ने जीता था। सीपीआई-एमएल के सुदामा प्रसाद ने आरा से लोकसभा के लिए चुने जाने के बाद यह सीट खाली कर दी थी। लेकिन उपचुनाव में सीपीआई-एमएल के राजू यादव करीब दस हज़ार वोटों से चुनाव हार गए। यहां भी जन सुराज कुछ ख़ास नहीं कर सका क्योंकि उसके उम्मीदवार किरना सिंह को सिर्फ़ 5622 वोट मिले। सीपीआई-एमएल उम्मीदवार राजू यादव की हार मुख्य रूप से उनकी जाति की वजह से हुई।

चारों सीटों के नतीजों का विश्लेषण करने के बाद कहा जा सकता है कि तेजस्वी यादव और उनके सहयोगियों को वोट तो अच्छे मिल रहे हैं, लेकिन इतने नहीं कि वे जीत की रेखा पार कर सकें। चुनाव नतीजों के बाद तेजस्वी ने कहा कि वे निराश नहीं हैं और उन्हें उम्मीद है कि 2025 में उनकी सरकार बनेगी। लेकिन ऐसा लगता है कि तेजस्वी यादव को गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

राजद झारखंड के नतीजों से खुश है, जहां उसने पिछले चुनाव की एक सीट के मुकाबले चार सीटें जीती हैं, लेकिन इससे बिहार में उसे कोई मदद नहीं मिलेगी। विपक्ष को निश्चित रूप से एक कमजोर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का सामना करना पड़ेगा, लेकिन उनके सहयोगी पहले से कहीं अधिक जोश के साथ चुनाव लड़ेंगे। तेजस्वी और उनके सहयोगियों के लिए सवाल यह है कि वे कमजोर नीतीश कुमार का फायदा उठाने के लिए कितने तैयार हैं, जो शानदार वापसी करने के लिए मशहूर हैं।

> बिहार उपचुनाव 2024 में एनडीए ने महागठबंधन की कमजोरियों को उजागर किया, चारों सीटें जीतकर अपनी बढ़त साबित की। बेलागंज, रामगढ़, और इमामगंज जैसे गढ़ों में हार ने दिखाया कि तेजस्वी यादव को कोर वोट बैंक और रणनीति पर दोबारा काम करने की जरूरत है। 2025 के विधानसभा चुनावों के लिए यह नतीजे एक स्पष्ट संदेश हैं कि कमजोर नीतीश क़ुमार भी एक मजबूत एनडीए के साथ खडे हैं।

****

गांधीजी का मानवतावादी राष्ट्रवाद बनाम संघ परिवार का हिंदू राष्ट्रवाद

प्रो राम पुनियानी

भारत के औपनिवेशिक संघर्ष के दौरान देश में कई सकारात्मक सामाजिक बदलाव देखने को मिले, जिनमें सबसे प्रमुख था 'हिंदू-मुस्लिम एकता' का उभरना और एक साझा भारतीय पहचान का विकास। इस विचारधारा को औपनिवेशिक विरोधी राष्ट्रवादी आंदोलन ने प्रेरित किया, जिसके महान प्रतीक महात्मा गांधी बने। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए अपनी जान तक की बाजी लगाई और अपने खुले सीने पर तीन गोलियां झेली। गांधीजी ने कहा था, "हमें केवल समझौता नहीं चाहिए, हमें दिलों का मेल चाहिए, जो इस सोच पर आधारित हो कि भारत के हिन्दू और मुसलमान एकजुट हुए बिना स्वराज का सपना पूरा नहीं हो सकता। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच शांति पारस्परिक भय पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह बराबरी का रिश्ता होना चाहिए जिसमें दोनों एक-दूसरे के धर्मों का सम्मान करें।"

> महात्मा गांधी ने हिंदू-मुस्लिम एकता की जो नींव रखी थी, वह आज भी भारतीय पहचान का हिस्सा है। गांधीजी के अनुसार, केवल समझौता नहीं, बल्कि दिलों का मेल जरूरी है। हालांकि, कुछ राष्ट्रवादी ताकतें समाज में विभाजन और घृणा फैलाकर गांधीजी के सिद्धांतों का उलट प्रचार कर रही हैं।

इसके विपरीत, कुछ तथाकथित राष्ट्रवादी ताकतों ने धर्म का मुखौटा पहनकर समाज में विभाजन की नीति अपनाई। उन्होंने उपनिवेश-विरोधी आंदोलन में भाग नहीं लिया, बल्कि घृणा और असमानता का प्रचार किया। आरएसएस के दूसरे सरसंघचालक, गोलवलकर ने अपनी पुस्तक में जर्मनी द्वारा यहूदियों का सफाया करने की तारीफ की और इसे नस्लीय शुद्धता का उदाहरण बताया। उन्होंने लिखा, "जर्मनी ने दिखाया कि विभिन्न नस्लों और संस्कृतियों का मेल असंभव है, जो हिंदुस्तान के लिए सीखने योग्य बात है।" इसी सोच के तहत आरएसएस ने भारत में मुसलमानों और ईसाइयों के खिलाफ घृणा फैलाने का अभियान चलाया।

यह अभियान कई दशकों तक सीमित रहा, लेकिन हाल के वर्षों में यह आम समाज का हिस्सा बन गया है। इसके परिणामस्वरूप मुस्लिम-विरोधी हिंसा, लिंचिंग, और अन्य अत्याचार बढ़ गए हैं। मुसलमान समाज में अलग-थलग हो गए हैं और वे दूसरे दर्जे के नागरिक बनने की ओर बढ़ रहे हैं। भाजपा और आरएसएस के कई नेता इस घृणा

को बढ़ावा देने के लिए नए-नए तरीके खोज रहे हैं। वे "उन्हें उनके कपड़ों से पहचाना जा सकता है," "श्मशान-कब्रिस्तान," "लव जिहाद," और "वोट जिहाद" जैसे नारों का इस्तेमाल कर मुसलमानों का दानवीकरण कर रहे हैं। इस माहौल में दो प्रमुख नेता, गिरिराज सिंह और योगी आदित्यनाथ, अपनी भड़काऊ टिप्पणियों से इस नफरत को और हवा दे रहे हैं।

गिरिराज सिंह, जो नफरत फैलाने वाले नेताओं में अग्रणी माने जाते हैं, ने हाल में कहा, "यदि कोई मुस्लिम घुसपैठिया तुम्हें एक तमाचा मारे, तो सब मिलकर उसे 100 तमाचे मारो। घर में तलवार, भाला और त्रिशूल रखो और उनकी पूजा करो, ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे अपनी रक्षा कर सको।"

यह टिप्पणी न केवल समाज में नफरत बढ़ाती है, बल्कि गांधीजी के सिद्धांतों के भी विपरीत है। गांधीजी ने कहा था कि यदि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो दूसरा गाल आगे कर देना चाहिए। गांधीजी के राष्ट्रवाद का आधार प्रेम और मैत्री था, जबकि वर्तमान हिंदू राष्ट्रवाद इसके उलट नफरत और हिंसा को बढ़ावा दे रहा है।

बापू का हत्यारा एक नरपिशाच था

के विक्रम रॉव

नवंबर 15, 1949 को महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोड्से को फांसी दी गई, जो इस निर्मम घटना का प्रतीक बन गया। गांधी जी की हत्या 30 जनवरी 1948 को हुई, जब गोड्से ने बिड़ला हाउस में प्रार्थना सभा के दौरान उन पर गोलियां चलाईं। गांधी जी के अंतिम शब्द "राम...रा..." थे, और उनकी पोती आभा ने उन्हें संभाला। हत्या के बाद, अफवाहें फैलीं कि हत्यारा मुसलमान है, लेकिन गृहमंत्री सरदार पटेल ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए स्पष्ट किया कि हत्यारा हिंदू था।

नाथूराम गोड्से का जीवन साधारण था। वह एक सामान्य परिवार से आया था, जिसका पिता डाकखाने में मामूली बाबू था। गोड्से पढ़ाई में कमजोर था और मिडिल स्कूल में फेल होने के बाद पढ़ाई छोड़ दी। वह किसी बड़े आंदोलन या विचारधारा से नहीं जुड़ा था, लेकिन 1944 में उसने गांधी जी के खिलाफ हिंदू महासभा के धरने में भाग लिया। गोड्से का जीवन संकीर्णता और हिंसा का प्रतीक था।

गांधी जी की हत्या नाथूराम का पहला प्रयास नहीं था; उसने पहले भी बिड़ला भवन में बम फेंकने की कोशिश की थी। 30 जनवरी 1948 को उसने गांधी जी की प्रार्थना सभा में गोलियां चलाईं। गोड्से का मकसद नफरत और विघटनकारी था, और उसने हत्या के बाद अपने आपको मुसलमान के रूप में दिखाने की कोशिश की।

गोड्से एक बेरोजगार और मानसिक रूप से अस्थिर व्यक्ति था। जेल में उसकी मेडिकल रिपोर्ट ने उसकी मानसिक बीमारी को उजागर किया। दिलचस्प बात यह है कि उसने अपनी मौत के बाद अपने परिवार के लिए बीमा कराया था।

गोड्से ने अपने मृत्यु दंड के खिलाफ ब्रिटिश प्रिवी काउंसिल में अपील की, जो उसके "ऐतिहासिक मिशन" के प्रति असमंजस को दर्शाता है।

कुछ लोग गोड्से को महान विचारक मानते हैं, लेकिन यह तर्क कमजोर है। हत्या एक जघन्य अपराध है, और गोड्से ने एक निहत्थे, वृद्ध गांधी जी को मारा, जो सत्य और अहिंसा के प्रति समर्पित थे। गोड्से का कृत्य हमेशा एक नृशंस हत्या के रूप में याद रखा जाएगा, और उसकी प्रशंसा भारतीय संस्कृति के मूल्यों का अपमान है, जो शांति, सहिष्णुता और अहिंसा में विश्वास करती है।

एक और नेता योगी आदित्यनाथ, जो 'बुलडोजर न्याय' के लिए जाने जाते हैं, ने "बटेंगे तो कटेंगे" का नारा दिया। इस नारे का मतलब है कि अगर हिंदू बंट गए, तो उनका कत्लेआम हो जाएगा। आरएसएस के शीर्ष नेताओं ने इस नारे का समर्थन किया है। आरएसएस के महासचिव दत्तात्रेय होसबोले ने इस नारे को संघ का संकल्प बताया है, जो हिंदू एकता को बढ़ावा देने का प्रतीक है।

इस बयान का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आरएसएस की रणनीति में 2024 के चुनाव को ध्यान में रखते हुए एकता को बढ़ावा देना है, ताकि दलित और अन्य पिछड़े वर्ग भाजपा के पक्ष में रहें। लेकिन यदि दलित और पिछड़े वर्ग इंडिया गठबंधन के साथ जाते हैं, तो हिंदुओं का कत्लेआम किसके द्वारा किया जाएगा? आरएसएस के अनुसार, यह काम मुसलमान करेंगे। जबकि हकीकत में मुसलमान समाज में पहले से ही हाशिए पर हैं।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सभी भारतीयों की एकता महत्वपूर्ण थी। इस आंदोलन ने एकता को भारतीय पहचान का आधार बनाया, जिसका प्रतिबिंब हमारे संविधान में भी मिलता है। गांधीजी, जिन्हें 20वीं सदी का महानतम हिंदू कहा जा सकता है, ने कभी हिंदू एकता का नारा नहीं दिया, न ही मौलाना आजाद और खान अब्दुल गफ्फार खान ने मुसलमानों की एकता का आव्हान किया।

> आरएसएस की विभाजनकारी राजनीति आज भी नफरत फैलाने पर केंद्रित है। इसके विपरीत, राहुल गांधी और अन्य नेता गांधीजी के आदर्शों को सामने रखते हुए प्रेम, समरसता और एकता की बात कर रहे हैं, ताकि संविधान के मूल्यों को पुनः स्थापित किया जा सके।

आज की भाजपा, जो "कतार में सबसे पीछे खड़े व्यक्ति" की भलाई की बात करती है, उसके क्रियाकलाप एकताबद्ध भारत के विपरीत हैं। वह राहुल गांधी की "मोहब्बत की दुकान" का मखौल बनाती है और आरएसएस से मिलने पर उनके इनकार को लेकर सवाल उठाती है। पर यह सवाल उठता है कि आरएसएस क्यों राहुल गांधी से मिलना चाहता है? असल में, आरएसएस अपनी नफरत आधारित राजनीति के खिलाफ खड़े राहुल गांधी से वैधता प्राप्त करना चाहता है। राहुल गांधी भारत के प्रेम और मैत्री के राष्ट्रीय चरित्र को पुनः स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं, जो संविधान के मूल सिद्धांतों में से एक है।

यदि आरएसएस चाहता है कि राहुल गांधी उनसे मिलें, तो उसे अपनी विभाजनकारी विचारधारा में आमूल बदलाव करना होगा और भारतीय संविधान के मूल्यों को अपनाना होगा। यही कारण है कि गांधीजी के शिष्य नेहरू ने कभी आरएसएस को महत्व नहीं दिया और इंदिरा गांधी ने उनके प्रमुख से मिलने के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया। आरएसएस का इतिहास बताता है कि वह अपने विरोधियों के माध्यम से वैधता प्राप्त करने की कोशिश करता है।

****

(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया. लेखक आईआईटी मुंबई में पढ़ाते थे और सन 2007 के नेशनल कम्यूनल हार्मोनी एवार्ड से सम्मानित हैं।)

आधुनिक गुरु का दृष्टिकोण: भगवा नहीं, सेवा का मार्ग

जगदीश गौतम

समाज में बढ़ते तनाव और विभाजन के दौर में, जब राजनीतिक और सांस्कृतिक जटिलताएं हर ओर छाई हुई हैं, प्रसिद्ध आध्यात्मिक नेता डॉ. विनोद स्वर्ण गुरु ने एकता, समरसता, और मानवता के संदेश के साथ नई राह दिखाने का प्रयास किया है। हाल ही में दिल्ली में आयोजित एक सभा में अपने प्रेरक विचार साझा करते हुए उन्होंने राष्ट्रीय विकास और सामाजिक सद्भाव के लिए करुणा और समावेशिता को अपनाने की अपील की। उनकी बातें न केवल एक आदर्श समाज की ओर इशारा करती हैं, बल्कि तेजी से बदलते विश्व परिदृश्य में भारत की वैश्विक पहचान को सुदृढ़ करने की दिशा में भी प्रेरणा देती हैं।

अजमेर विवाद और सम्भल हिंसा जैसे संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा, "धार्मिक स्थलों को पूजा का स्थान मानना चाहिए, न कि विभाजन का मैदान." उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि धर्म और आस्था मानवता को जोड़ने का माध्यम है, न कि तोड़ने का। गुरुजी ने अपने विचार में स्पष्ट किया कि "भारत की वैश्विक आकांक्षाओं की नींव उसकी विविधता और एकता में छिपी है." उनका मानना है कि सामाजिक समरसता और समावेशिता के बिना नवाचार और विकास असंभव है.

पेरिस से आध्यात्मिक विज्ञान में डॉक्टरेट प्राप्त डॉ. स्वर्ण गुरु

तर्कसंगत और अंधविश्वास-मुक्त आध्यात्मिकता के समर्थक हैं. उनकी संस्था स्पिरिचुअल सोल्स

मानसिक स्वास्थ्य, नशा, और सामुदायिक विवाद जैसे मुद्दों पर काम कर रही है. समाज सेवा पर केंद्रित यह संस्था सामाजिक बदलाव लाने में अग्रणी है.

सामाजिक समरसता पर जोर
डॉ. विनोद स्वर्ण गुरु ने राष्ट्रीय विकास और सामाजिक सद्भाव के लिए करुणा और समावेशिता को अपनाने का आह्वान किया, जो भारत की वैश्विक पहचान को मजबूत बनाने का एक अहम कदम है।

एक आदिवासी मां और पिछड़ा वर्ग के पिता के पुत्र के रूप में जन्मे, डॉ. स्वर्ण गुरु का जीवन भारत की विविधता का प्रतीक है. उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को पार कर अपनी अलग पहचान बनाई. उनके विचार परंपरा और आधुनिकता का संतुलन प्रस्तुत करते हैं.

तेजी से बदलते परिदृश्य में, डॉ. स्वर्ण गुरु का संदेश अहिंसा, करुणा, और समावेशिता को अपनाने की प्रेरणा देता है. उनका मानना है कि विविधता में एकता भारत को शांति और प्रगति के पथ पर ले जाने में सहायक होगी.

डॉ. स्वर्ण गुरु की यह अपील आज के नेताओं और नागरिकों को प्रेरित करती है कि वे एक ऐसे भारत का निर्माण करें जो विभाजन से ऊपर उठे और सामूहिक कल्याण को प्राथमिकता दे. उनका दृष्टिकोण हमारे समय के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक है.

****

लेखक मीडिया मैप के मुख्य प्रबंधक है।

सोशल मीडिया से

समत्व नहीं एकत्व नहीं असमानता और विभिन्नता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जाति को ढोयेंगे धर्मांतरण होने देंगे, पर कभी समानता के साथ एकता नहीं होने देंगे हम हिंदू हैं हाँ, डी.एन.ए. हमीरा एक है।

****

जीवन है

तो आस है

विश्वास है

कुछ कर गुजरने की

प्यास है।

****

पल जो गुजर गया कभी पकड़ नहीं पाओगे.

आने वाला पल तुम्हारा है गर पकड़ पाओगे.

****

ज्ञान का प्रकाश समस्त पृथ्वी को प्रदुषण रहित वायु और शुद्ध जल की ओर अग्रसर कर पृथ्वी की सृष्टि विनाश से रक्षा करे

****

भुलाना है कहाँ आसान तेरी रुसवाईयां और मेरी तन्हाईयां.

****

~डा. रवीन्द्र कुमार

****

6 दिसंबर : डॉ. भीमराव अंबेडकर पुण्यतिथि

दलित और महिला संघर्ष के लिए नेतृत्व डॉ. अम्बेडकर

प्रशांत गौतम

भारत का इतिहास संघर्ष, बलिदान, और सामाजिक सुधारों की गाथा से भरा पड़ा है। 25 दिसंबर 1927, मनुस्मृति दहन दिवस और 6 दिसंबर 1956, डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की पुण्यतिथि, दोनों ही ऐसे ऐतिहासिक अवसर हैं जो सामाजिक समानता, मानवाधिकार, और न्याय के प्रति उनकी अडिग प्रतिबद्धता की याद दिलाते हैं।

दिसंबर 25 को पूरा विश्व क्रिसमस मानता है लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि 25 दिसंबर भारत के दलित और महिला वर्ग के लिए बहुत बड़ा ऐतिहासिक दिन है|

इस दिन 97 साल पहले वर्ष 1927 के आधुनिक भारत माता के एक यशस्वी पुत्र और भारत के संविधान के निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने हजारों लोगों के साथ महाराष्ट्र के प्रसिद्ध महाड सत्याग्रह में डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने मनुस्मृति को जलाया था जिसमे दलितों और महिलाओ के साथ पशुओ से भी बुरा व्यहवार करने का प्रावधान किया था |

सार्वजनिक रूप से मनुस्मृति को जलाना न केवल उच्च वर्ग के ब्राह्मणवाद के प्रति आक्रोश का प्रतीक था बल्कि यह दलित और महिलाओं के आत्म सम्मान को उजागर करने तथा मुक्ति का मार्ग दिखने का एक जरिया था मानवीय शोषण का धार्मिक आधार प्रदान करने वाले ग्रंथ का रूप से

प्रतीकात्मक अंतिम संस्कार की चिता में जला कर किया गया था इसने दलितों के प्रति अपमान उच्च जाति के आधिपत्य और क्रूरता अंत का संकेत भी दिया था|

पाठ को जलाने के लिए 'वेदी' चिता तैयार करने में लगभग छह लोगों की मेहनत लगी थी इसके किनारो पर अस्पृश्यता को नष्ट करो ब्राह्मणवाद को दफन करो मनुस्मृति ची दहन भूमि (मनुस्मृति के लिए शमशान) जैसे नारे वाले बैनर लगाए गए थे|

मनुस्मृति दहन की इस प्रक्रिया को रोकने के लिए जातिवाद हिंदुओं का भारी दबाव था|

डॉ भीमराव अंबेडकर जी मुंबई से विरोधी स्थल तक सड़क मार्ग से नहीं बल्कि नाव से पहुंचे थे क्योंकि उन्हें डर था की उन्हें रस्ते में ही न रोक लिया जाये मनुस्मृति को जलाने से पहले डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने भाषण दिया की उन प्राचीन हिंदू धर्म ग्रंथो को नष्ट करना आवश्यक है जो असमानता और अन्याय को धर्म संगत मानते है|

मनुस्मृति दहन से भारत के हिंदू धर्म के ठेकेदारों को भारी सदमा पहुंचा पर कुछ चुपचाप भारी बदलाव की आहट को सुन रहे थे| भारत में जातिवादी

धार्मिक रूढ़िवादियों पर जो आक्रमण डॉक्टर अंबेडकर जी ने किया था उसे भारत के इतिहास में 25 दिसंबर 1927 का दिन हमेशा याद रखा जाएगा| उस दिन डॉ अंबेडकर जी ने मनुस्मृति को आग के हवाले कर हिंदुओं के सामाजिक ढांचे में बदलाव की मांग की थी महाराष्ट्र के इस सम्मेलन तथा इसमें मनुस्मृति जैसे ग्रंथ को जलने के दूरगामी परिणाम हुए| भारत के इतिहास में दलितों में सामाजिक जागृति के लिहाज से यह एक ऐतिहासिक दिन था|

विशेष बात यह थी कि इस सत्याग्रह में विढोबा महादेव वाडवल जैसे मराठा वृद्ध सामाजिक कार्यकर्ता भी संक्रियता से शामिल हुए लेकिन ब्राह्मणवादी अखबारों ने इस घटना की निंदा में खूब लिखा| शंकरचार्य भी तिलमिला गए| यही नहीं कुछ दलित नेता भी महाड सत्याग्रह व मनुस्मृति के खिलाफ बोले|

डॉ अंबेडकर के भाषण के बाद मुंबई के गैर ब्राह्मण दल व सत्यशोधक के नेता जेधे व जवलकर ने अपने भाषण में कहा की डॉ अंबेडकर के बराबर ज्ञानी व परायण कर्तव्य नेता दलितों में कोई नहीं है|

वह दलितों के कल्याण के लिए जी जान से प्रयास कर रहे हैं| आपको उनके पीछे चलना है उन्होंने वह उपस्थित दलितों से कहा की आपका भला काल्पनिक ईश्वर नहीं बल्कि डॉ अंबेडकर जी ही कर सकते हैं यह आपके सेनापति हैं इसलिए यह जैसा कहे वैसा ही करना ठीक होगा सम्मेलन में मनुस्मृति जलाएं जाने के बाद डॉ अंबेडकर जी ने कहा, सदियों से हाशिये पर डाल दिए गए अछूत समाज की गरीबी, दरिद्रता पीड़ा व दुर्दशा पर हिंदुओं का ध्यान खींचने के लिए हमने यह महान काम किया|

इस आयोजन के दौरान उन्होंने स्पष्ट कहा:

"ऐसे धर्मग्रंथ जो मानवता को बांटते हैं, उन्हें जलाना कोई पाप नहीं, बल्कि मानवता का सबसे बड़ा धर्म है।"

डॉ. अंबेडकर की पुण्यतिथि: प्रेरणा का दिन

6 दिसंबर 1956 को डॉ. अंबेडकर का निधन हुआ, लेकिन उनका संघर्ष और योगदान आज भी समानता और न्याय के प्रतीक हैं, जिन्होंने भारत के संविधान के माध्यम से सामाजिक सुधार की नींव रखी।

डॉ. अंबेडकर जी का विरोध सिर्फ व्यक्तिगत आस्था का मामला नहीं था; यह महिलाओं और दलितों के प्रति मनुस्मृति में लिखी गई अन्यायपूर्ण नीतियों के खिलाफ था। इन सिद्धांतों ने समाज को अमानवीय रूप से विभाजित किया:

मनुस्मृति के दिए गए अन्याय, असम्मानता के हिष्टकोण और शोषण को न्याय सगत बताने वाले कुछ उदाहरण इस प्रकार है|

1. एक लड़की को हमेशा अपने पिता के संरक्षण में रहना चाहिए विवाह पश्चात पति द्वारा उनका संरक्षण होना चाहिए पति के मृत्यु के बाद उसे अपने बच्चों की दया पर निर्भर रहना चाहिए लेकिन किसी भी स्थिति में एक महिला आजाद नहीं हो सकती|

2. जब ब्राह्मण भोजन करे तब उन्हें किसी मुर्गे, कुत्ते, किन्नर, शूद्र या ऐसी महिला जो रजस्वला (पीरियड्स) में हो उनको देखना भी नहीं चाहिए|

3. दलित को घी खाने का कोई हक नहीं है|

4. दलित और महिलाओं को पढ़ने का कोई हक नहीं है|

5. दलित अगर हिंदू ग्रंथ के वेद सुन ले तो उसके कानों में शीशा पिघला कर डाल देने की सजा है यदि शूद्र वेद अपने मुंह से बोलता है तो उसकी जवान काट देने की सजा है|

6. एक विधवा महिला दूसरी बार विवाह नहीं कर सकती लेकिन पुरुष कर सकते हैं|

7. यदि निचली जाति का कोई पुरुष उच्च जाति की महिला के साथ यौन संबंध बनाता है तो संबंधित व्यक्तियों को मौत की सजा दी जाएगी लेकिन उच्च जाति का कोई पुरुष निचली जाति की महिला के साथ यौन संबंध बनाता है तो सिर्फ महिला को मौत की सजा दी जाएगी ब्रह्म पुरुष को कोई सजा नहीं होगी मतलब पुरुष अपने से निचली जाति के साथ संबंध बन सकता है लेकिन अपने से उच्च जाति के साथ नहीं|

8. महिलाएं सिर्फ पति की सेवा उनको खुश करने के लिए और शारीरिक संबंध बनाने के लिए है और अछूत

महिला को अपने स्तन भी नहीं ढकने चाहिए|

9. महिलाओं को उनके पति के मृत्यु के बाद उनके पति की चिता के साथ ही जला देना चाहिए |

10. शूद्रों को तालाब से पानी पीने का हक नहीं है लेकिन तालाब में गाय भैंस आदि जानवरों को स्नान कराया जा सकता है|

डॉ अंबेडकर को इस कार्य के लिए काफी आलोचना का सामना करना पड़ा| कुछ लोगों ने कहा कि किसी पाठ को जलाने से क्या हासिल होगा| उन्होंने जवाब दिया की गांधी विदेशी कपड़े क्यों जलते हैं|

मनुस्मृति को सती प्रथा और बाल विवाह प्रणाली का मूल कारण मानने वाले डॉ अम्बेडकर जी सैदव महिलाओं की मुक्ति और दलितों के उत्थान के लिए खड़े रहे| इस कारण इस दिन को 'स्त्री मुक्ति दिवस' के रूप में भी याद किया जाता है|

डॉ. भीमराव अंबेडकर जी , भारत के संविधान निर्माता और सामाजिक न्याय के सच्चे सेनानी, ने अपने जीवनभर दलितों, महिलाओं, और समाज के वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

उनकी पुण्यतिथि, 6 दिसंबर, केवल उनके जीवन का अंत नहीं, बल्कि उनके आदर्शों और विचारधारा के प्रति सम्मान का दिन है। अंबेडकर जी ने भारतीय संविधान के माध्यम से समानता और स्वतंत्रता के अधिकारों को सुनिश्चित किया, जिससे समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और असमानता को समाप्त करने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अंबेडकर जी ने हमेशा महिलाओं और दलितों के लिए समान अधिकारों की वकालत की। उन्होंने कहा:

"मैं किसी समाज को तब तक प्रगतिशील नहीं मानता जब तक उस समाज में महिलाओं को समान अधिकार और सम्मान न मिले।"

उनकी जीवनभर की मेहनत और बलिदान ने समाज को नई दिशा दी। वे केवल संविधान निर्माता नहीं थे, बल्कि लाखों लोगों के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। 25 दिसंबर 1927 और 6 दिसंबर 1956, इन दोनों तिथियों का महत्व एक समान उद्देश्य को दर्शाता है—**समानता, न्याय, और सम्मान का अधिकार।**

समानता और न्याय का संदेश

25 और 6 दिसंबर को डॉ. अंबेडकर के संघर्ष और विचारों की याद दिलाती है। उनका मनुस्मृति दहन और बौद्ध धर्म अपनाना समाज में समानता की दिशा में महत्वपूर्ण मील के पत्थर थे।

- 1927 में मनुस्मृति दहन के माध्यम से अंबेडकर जी ने भेदभाव और अन्याय के खिलाफ विद्रोह किया।
- 1956 में, उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाकर और लाखों दलितों को प्रेरित करके सामाजिक सुधार के नए युग की शुरुआत की।

मनुस्मृति दहन दिवस और अंबेडकर जी की पुण्यतिथि न केवल दलितों और महिलाओं के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। ये दिन हमें याद दिलाते हैं कि सामाजिक समानता और न्याय के लिए संघर्ष केवल अतीत की बात नहीं है; यह आज भी जारी है।

डॉ. अंबेडकर जी ने कहा था:

"मैं किसी समुदाय की प्रगति को उस समुदाय में महिलाओं के दर्जे से मापता हूँ।"

उनकी इस सोच को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी हम सबकी है।

25 दिसंबर और 6 दिसंबर, दोनों ही भारतीय इतिहास में मानवता और समानता के प्रतीक हैं।

डॉ. अंबेडकर जी के साहस और संघर्ष ने हमें एक ऐसा समाज दिया जो समानता और न्याय की नींव पर खड़ा है।

इन दिनों को मनाने का अर्थ केवल उन्हें याद करना नहीं है, बल्कि उनके विचारों को अपने जीवन में उतारना और एक समतामूलक समाज की दिशा में कदम बढ़ाना है।

"असमानता को नकारें, समानता को अपनाएँ—यही डॉ. अंबेडकर जी की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।"

****

लेखक मीडिया मैप के मुख्य सह-सम्पादक है।

अलविदा, प्यारे मित्र: एक अनमोल रिश्ते की कहानी

प्रो प्रदीप माथुर

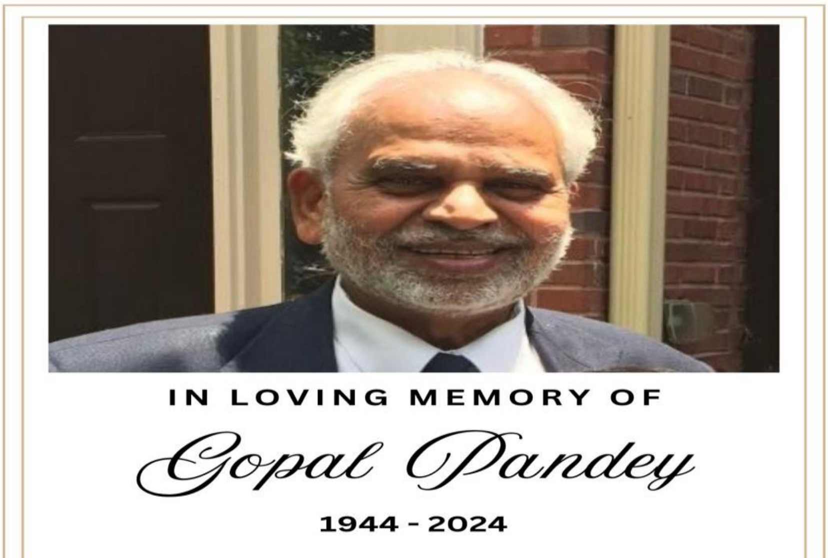

रविवार को चिन्मय भवन सभागार में परिवार के सदस्य और मित्र, चाहे वे बूढ़े हों या कम उम्र के, एक ऐसे अद्भुत व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए, जिसने उनके जीवन को छुआ और उनके मन में एक स्थायी छाप छोड़ी। वह कृष्ण गोपाल पांडे थे, जो अपना नाम के. गोपाल पांडे लिखना पसंद करते थे, शायद प्रसिद्ध संपादक पद्म भूषण आर. माधवन नायर से प्रेरित होकर।

मैं पहली बार पांडे जी से 1970 के दशक के आखिर में मिला था, जब वे द ट्रिब्यून में इंटरव्यू देने आए थे। मैं पहले से ही वहां काम कर रहा था और मुझे यह जानकर खुशी हुई कि लखनऊ की पृष्ठभूमि वाला कोई व्यक्ति द ट्रिब्यून में शामिल होना चाहता है। इसलिए हमारी एक अच्छी मुलाकात हुई, जिसमें उन्होंने मुझसे संगठन और उसके प्रमुखों के बारे में बातें पूछीं। मुझे उनके साथ जानकारी साझा करने में खुशी हुई। श्री पांडे का चयन तो हो गया, लेकिन किसी कारण से वे द ट्रिब्यूट में शामिल नहीं हो सके। फिर मैं 1980 में दिल्ली चला गया। जफर मार्ग पर मेरा कार्यालय मंडी हाउस क्रॉसिंग के करीब था, जहां वे फिक्की में उनके पीआर विभाग का नेतृत्व कर रहे थे। हमारी मुलाकातें काफी बार होने लगीं। हमें जल्द ही पता चल गया कि हम दोनों में बहुत कुछ समान है। हम दोनों की पृष्ठभूमि लखनऊ की थी, हम दोनों ने अलग-अलग समय पर लखनऊ विश्वविद्यालय से पढ़ाई की थी और हम दोनों ने कड़ी मेहनत और संघर्ष के बाद जीवन में तरक्की की थी। कुछ और चीजें भी समान थीं। हम दोनों की पत्नियाँ अध्यापन की नौकरी करती थीं और दिल्ली से दूर रहती थीं और हमें घर चलाने और बच्चों की देखभाल और उनकी शिक्षा आदि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

फिक्की के जनसंपर्क प्रमुख के रूप में श्री पांडे ने समाचार और अन्य लाभों के लिए बहुत से पत्रकारों को आकर्षित किया। लेकिन किसी तरह मेरा उनसे एक गहरा भावनात्मक रिश्ता बन गया और हमारे रिश्ते पेशेवर होने के बजाय व्यक्तिगत हो गए जो हमारे दो परिवारों तक फैल गए। यह गहरा भावनात्मक रिश्ता हमेशा के लिए कायम रहा। जब वे पिछले हफ़्ते अपनी अनंत यात्रा पर चले गए तो मुझे लगा कि मैंने एक करीबी पारिवारिक सदस्य खो दिया है।

श्री पांडे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके पास दिमाग और दिल दोनों ही तरह के गुण थे। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक रहा। अपने आस-पास के लोगों के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी और उनका सेंस ऑफ ह्यूमर भी बहुत बढ़िया था। उनमें खुद पर हंसने की एक दुर्लभ विशेषता थी। उन्हें किसी तरह की हैसियत की चिंता नहीं थी और वे सभी से समान रूप से मिलते थे। हालाँकि वे बहुत से लोगों को जानते थे, लेकिन अपनी दुर्लभ अंतर्दृष्टि से वे सभी तक पूरी तरह से पहुँच पाते थे।

श्री पांडे बहुत प्रतिभाशाली थे और उनमें गतिशील बौद्धिक ऊर्जा थी। उनमें बहुत रचनात्मक प्रवृत्ति थी। मैंने उनसे कई बार कहा कि वे अपनी रचनात्मक ऊर्जा को किसी ठोस काम में लगाएं जैसे कि कोई किताब लिखना या मीडिया के छात्रों के साथ सत्र लेना, लेकिन उन्होंने हमेशा मना कर दिया। दिल्ली के मीडिया जगत में वे एकमात्र ऐसे दोस्त थे जिन्हें मैं चाहता था, लेकिन भारत के सबसे प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान, आईआईएमसी, नई दिल्ली में अपने छात्रों से बात करने के लिए कक्षा में नहीं ला सका।

लखनऊ पृष्ठभूमि के कुछ वरिष्ठ पत्रकार हैं जो पांडेय जी के अच्छे मित्र रहे हैं। उन्होंने मुलाकात की और एक वीडियो चर्चा में अपनी श्रद्धांजलि रिकॉर्ड की। वीडियो यू ट्यूब पर है और इसे mediamap.co.in लिंक पर क्लिक करके देखा जा सकता है।

कई अन्य लोगों की तरह प्रेस क्लब ऑफ इंडिया पांडे जी के लिए दूसरा घर था। अब उनकी अनुपस्थिति में प्रेस क्लब मेरे लिए कभी भी वैसा नहीं रह जाएगा जैसा पहले था।

यह सोचते हुए कि उनके इस दुनिया से चले जाने के बाद कौन उन्हें याद करेगा, प्रसिद्ध उर्दू शायर जिगर मुरादाबादी, जो शराब के बड़े शौकीन थे, ने कहा था:

जान कर मिन्जुमलऐ खासने मैखाना मुझे
मुद्दतो रोया करेंगे जामो पैमाना मुझे।

(मुझे शराब पीने का बहुत शौकीन और शराब बार का एक विशेष सदस्य के रूप में याद करते हुए, शराब का माप और गिलास मुझे लंबे समय तक याद रखेंगे)

पाण्डेय जी शराब के शौकीन नहीं थे और प्रेस क्लब कोई पब नहीं है, लेकिन प्रेस क्लब के कप और तश्तरियां तथा कुर्सियां और मेजें, निःसंदेह पाण्डेय जी को लम्बे समय तक याद रखेंगी।

अलविदा प्यारे अच्छे पुराने दोस्त!

****

लेखक : वरिष्ठ पत्रकार , मीडिया गुरु एवं मीडिया मैप के संपादक हैं।

IN LOVING MEMORY OF

Gopal Pandey

1944 - 2024

पांडेय जी जिन्होंने जनसंपर्क को नयी परिभाषा दी

पंडित कृष्ण गोपाल पांडेय जी मंगलवार नम्बर 26 को इस असार संसार से विदा हो गए। मेरे विचार मे हम दोनों ने लगभग 55 साल पूर्व लखनऊ में पत्रकारिता शुरू की। उन्होंने राष्ट्रीय न्यूज एजेंसी यू एन आई में काम शुरू किया और कालांतर में नई दिल्ली आ गए। मैने कुछ सालों तक दैनिक स्वतंत्र भारत एवं अंग्रेजी दैनिक पायोनियर में काम करने के बाद टाइम्स ऑफ इंडिया ज्वाइन कर लिया। उनकी प्रतिभा के हम सभी कायल थे। इसलिए हमें आश्चर्य नहीं हुआ जब देश के उद्योगपतियों ने उनसे फिक्की में शामिल करने का अनुरोध किया। परिवार की बढ़ती जिम्मेदारियों के कारण भी उन्होंने शायद पत्रकारिता की मुख्य धारा छोड़ने का निर्णय किया था।

पंडित जी का निजी जीवन सादगी की मिसाल थे। उन्होंने एक चिंतक एवं सहयोगी के रूप ने सहयोग किया। वह मीडिया को सकारात्मक सोच का प्रतीक मानते थे। मुझे उनके इस असार संसार से विदा होने निजी दुख है, किंतु एक ही कामना है कि उनकी भांति जनसंपर्क का आधार जन सेवा ही होना चाहिए। उन्होंने पब्लिक रिलेशन को नए ढंग से परिभाषित किया था। वह इस क्षेत्र के प्रकाश स्तंभ थे।

मुझे अकसर आश्चर्य होता था कि अपने प्रगतिशील विचारों के चलते वह किस प्रकार उनके लिए प्रचार का कार्य करते थे, किंतु जब उदारीकरण की शुरुआत हुई तो उनकी भूमिका ऐतिहासिक हो गई। लाइसेस राज और राजनैतिक संरक्षण में पले उद्योगपति, जिसमें बिरला बंधु जैसे बड़े नाम थे , सिर्फ दलाल बन कर रह गए थे। उस अवधि में पंडित जी एक गुमनाम सिपाही की भूमिका निभा रहे थे। उन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था को लाइसेंस राज से मुक्त प्रतियोगिता के लिए वातावरण के लिए जो कार्य किया। अमित मित्र के वे सहयोगी थे, जिन्होंने प्रांत के वित्त मंत्री के रूप में बंगाल को राजनैतिक दलदल से मुक्त करा कर उद्योगों के रास्ते में लाने का प्रयास किया।

~ गोपाल मिश्रा
लेखक : वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एक चमकता सितारा जिसकी फिल्में हमेशा अपने समय से आगे रही

प्रशांत गौतम

जब भी भारतीय सिनेमा के सुनहरे दौर की बात होती है, देव आनंद का नाम सबसे पहले ज़ुबान पर आता है। उनका जन्म 26 सितंबर 1923 को पंजाब के गुरदासपुर में हुआ था। असली नाम धर्मदेव पिशोरीमल आनंद, लेकिन सिनेमा के पर्दे पर वह 'देव आनंद' के नाम से मशहूर हुए। उन्होंने अपनी एक्टिंग, अंदाज़ और दिलकश शख्सियत से फिल्म इंडस्ट्री में अलग पहचान बनाई। अपने ज़माने में वह एक स्टाइल आइकॉन के रूप में उभरे, और आज भी लोग उनकी स्टाइल और एटिट्यूड की तारीफ करते हैं।

देव आनंद का फिल्मी करियर 1940 के दशक में शुरू हुआ। उन्होंने 1946 में 'हम एक हैं' फिल्म से डेब्यू किया, लेकिन उन्हें असली पहचान मिली 1948 की फिल्म 'जिद्दी' से। इसके बाद, उन्होंने 'बाज़ी', 'गाइड', 'जॉनी मेरा नाम', 'हरे रामा हरे कृष्णा' जैसी कई सुपरहिट फिल्में दीं। उनके रोमांटिक अंदाज़ और अदाकारी ने उन्हें युवा दिलों की धड़कन बना दिया था।

देव आनंद का अपना एक अलग स्टाइल था। उन्होंने न सिर्फ अपने कपड़ों से, बल्कि अपने डायलॉग डिलीवरी और बॉडी लैंग्वेज से भी युवाओं को प्रभावित किया। उनका एवरग्रीन व्यक्तित्व और जिंदादिली हमेशा ही चर्चित रही। उनका यह अंदाज़ इतना अनोखा था कि हर नौजवान उनकी स्टाइल को अपनाने की कोशिश करता था।

देव आनंद का चार्म ऐसा था कि उनकी फिल्में सिर्फ सिनेमाघरों में ही नहीं, बल्कि फैशन की दुनिया में भी क्रांति ले आईं। उनका एक काला शर्ट पहनने का अंदाज़ इतना प्रसिद्ध हो गया कि युवा उनके जैसा काला शर्ट पहनकर सड़कों पर घूमने लगे। यह ट्रेंड कुछ ऐसा था कि उनकी हर फिल्म में उनके फैंस उनके पहनावे को कॉपी करने लगे। लेकिन इस पर एक अजीब घटना घटी – भारत सरकार ने उनके काले शर्ट पहनने पर बैन लगा दिया!

ये घटना 1950 के दशक की है, जब देव आनंद की लोकप्रियता चरम पर थी। कहा जाता है कि जब देव आनंद काले शर्ट में बाहर जाते थे, तो उनके फैंस उनकी एक झलक पाने के लिए भीड़ में शामिल हो जाते थे, और कभी-कभी यह भीड़ इतनी बेकाबू हो जाती थी कि भगदड़ की स्थिति पैदा हो जाती थी। उनकी शख्सियत और काले शर्ट की दीवानगी का आलम यह था कि सरकार को सुरक्षा कारणों से यह कदम उठाना पड़ा।

यह भी कहा जाता है कि काले शर्ट में देव आनंद की पर्सनालिटी इतनी जादुई थी कि लोग उनके आकर्षण से खुद को संभाल नहीं पाते थे। इस दीवानगी को देखते हुए देव आनंद ने भी बाद में खुद काले शर्ट पहनना बंद कर दिया, ताकि लोग शांति से रह सकें।

देव आनंद की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को नया रूप दिया। 'गाइड' जैसी फिल्मों में उन्होंने न सिर्फ एक रोमांटिक हीरो की भूमिका निभाई, बल्कि गंभीर और संजीदा विषयों पर भी काम किया। 'गाइड' में उनके द्वारा निभाया गया किरदार आज भी भारतीय सिनेमा के बेहतरीन पात्रों में गिना जाता है।

उन्होंने अपनी फिल्मों में हमेशा समाज से जुड़े मुद्दों पर बात की। चाहे वह युवा पीढ़ी की मानसिकता हो, या फिर समाज के ठहरे हुए विचारों को चुनौती देना। देव आनंद की फिल्में हमेशा अपने समय से आगे रही हैं। वह केवल एक अभिनेता ही नहीं, बल्कि एक निर्देशक और निर्माता भी थे। उन्होंने 'नवकेतन फिल्म्स' की स्थापना की, जो उनकी कई हिट फिल्मों का गढ़ बना।

देव आनंद का सिनेमा के प्रति प्यार और समर्पण जीवन भर बना रहा। उन्होंने अपने करियर में लगभग 114 फिल्मों में काम किया और सिनेमा की दुनिया में कई नई धाराएं शुरू कीं। उन्होंने कभी अपने जीवन में ठहराव नहीं आने दिया और हमेशा खुद को नए जमाने के साथ जोड़ा। उनकी आखिरी फिल्म 'चार्जशीट' 2011 में रिलीज़ हुई थी, जब वह 88 साल के थे।

देव आनंद का कहना था, "ज़िन्दगी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए।" उनका यह फॉर्मूला ही उनकी ज़िन्दगी की कुंजी थी। वह हमेशा आगे बढ़ते रहे, और यही वजह थी कि उन्होंने कभी किसी नकारात्मकता को अपने जीवन में हावी नहीं होने दिया।

3 दिसंबर 2011 को देव आनंद का लंदन में निधन हो गया, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवित है। वह सिनेमा जगत के ऐसे सितारे थे, जिन्होंने अपनी कला, स्टाइल और जिंदादिली से लाखों दिलों पर राज किया। उनकी फिल्में, उनका अंदाज़, और उनका जीवन आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं।

उनकी ज़िन्दगी का यह किस्सा कि उन्हें काले शर्ट पहनने पर बैन लगाया गया था, यह दिखाता है कि वह केवल एक अभिनेता नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति थे, जिनकी मौजूदगी का असर समाज पर गहरा था। देव आनंद का जन्मदिन उनके फैंस के लिए एक खास मौका होता है, जब वे उनकी यादों को ताज़ा करते हैं और उनकी फिल्मों को फिर से जीते हैं।

देव आनंद एक ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने भारतीय सिनेमा को एक नई दिशा दी। उनका स्टाइल, उनकी फिल्में और उनका व्यक्तित्व आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था।

****

लेखक मीडिया मैप के मुख्य सह-सम्पादक है।

सुविचार

“जो खुद पर विश्वास करता है उसे दूसरों को समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है।”

****

हमेशा अपने दिल की सुनो। यह भले ही आपके बाईं ओर हो, लेकिन यह हमेशा दाईं ओर होता है।

****

"सभी रिश्तों का सुनहरा नियम यह है कि निजी तौर पर एक-दूसरे को सुधारें और सार्वजनिक रूप से एक-दूसरे का बचाव करें।"

****

“हर सुबह अपने आप से बात करो

1. *मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ*
2. *मैं यह कर सकता हूं*
3. *भगवान हमेशा मेरे साथ है*
4. *मैं एक विजेता हूँ*
5. *आज मेरा दिन है।”*

****

डूबते जहाज़ के भागते चूहे

लेखक दिनेश वर्मा के बारे में

लेखक, दिनेश नारायण वर्मा, भारतीय सूचना सेवा के पूर्व अधिकारी हैं, अपनी सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने अपना दिल और आत्मा लेखन में लगा दी और 2016 में पीपुल्स सिंडिकेट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित अपनी पहली किताब 'माई टाइम्स माई टेल्स' से इसकी शुरुआत की, जो बरेली, यूपी से दिल्ली के हलचल भरे महानगर तक की उनकी यात्रा के दौरान हुई घटनाओं और प्रकरणों पर आधारित सत्ताईस कहानियों का संग्रह है।

श्री वर्मा ने 'ए फैसिनेटिंग ट्रिप टू ह्यूमन्स मैन्युफैक्चरिंग साइट' लिखने में दूसरा प्रयास किया, जो स्पष्ट रूप से एक अवधारणा पुस्तक थी जो मनोरंजक तरीके से मानवीय स्थिति पर एक अभिनव नज़र डालती है।

लघु कथाओं और लेखों 'मेरे समय की मेरी कहानियां' के हिंदी संस्करण के प्रकाशन के बाद, हाल ही में प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तक 'द ब्लेस्ड कर्स' पाठकों, विशेषकर युवाओं को स्वतंत्रता के आसपास के वर्षों में ले जाने की उनकी दीर्घकालिक इच्छा का परिणाम है, ताकि वे अपने पूर्वजों के दैनिक जीवन की कठोर वास्तविकताओं से परिचित हो सकें।

संलग्न कथा उनकी पुस्तक मेरे समय की मेरी कहानियाँ से ली गयी

- संपादक

वह चिल्ला जाड़ों की एक अन्धेरी रात थी। करीब दो बजे, जब अरविन्द गहरी नींद सो रहा था, उसे अपने दरवाज़े पर दबी दबी खट-खटाने की आवाज़ सुनाई दी। वह हडबडा के उठ कर बैठ गया और सोचने लगा कि रात के इस वक़्त कौन हो सकता है। उसने घड़ी की ओर नज़र डाली और झिझकते हुए उठकर दरवाज़ा खोला। उस के सामने उस के मित्र ध्रुवनाथ के सोलह वर्षीय पुत्र खड़े हुए थे जिसकी आँखे आंसुओं से भरी हुई थीं। ध्रुवनाथ अरविन्द से उम्र में बड़े थे और परदेस में उस के हितैशी थे। वह उनका बहुत आदर करता था।

गुड्डू के इस वक़्त आने से अरविन्द बहुत परेशान हो उठे। उनके पूछने पर गुड्डू ने रोते हुए बताया कि उसके पापा को दो घंटे से खून की उल्टी हो रही थी। अरविन्द अब पूर्णरूप से जाग चुका था। बीमारी की गंभीरता समझते हुए उसने तेज़ी से कपड़े बदले, दरवाज़े पर ताला लगाया और नाथ साहब के घर की ओर साइकिल पर रवाना हो गया जो करीब एक किलोमीटर दूर था। गुड्डू पहले ही जा चुका था।

चारों तरफ घोर अंधेरा फैला हुआ था। कहीं कहीं पर खम्बे पर मरी मरी रौशनी दिखाई दे रही थी जो सड़कों को प्रज्वलित कर पाने का असफल प्रयत्न कर रही थी। सड़कों और गलियों में व्यक्ति तो दूर किसी कुत्ते के भौकने की आवाज़ तक उसे सुनाई नहीं दी। रात्रि के घोर अन्धेरे ने पुरे शहर पर भयानक खामोशी की चादर फैला दी थी। आस पास के पेड़-पौधों से निकलते कीड़े-मकोड़ो की हल्की हल्की आवाज़ वातावरण को और भी भयानक बना रही थी। शायद अंधेरे का यह डरावनापन उसके लिए आने वाली डरावनी स्थिति का संकेत था। नाथ साहब के बारे में कुछ भी गलत सोचकर अरविन्द के दिल का बैठना स्वाभाविक ही था।

नाथ साहब राज्य सरकार के कार्यलय में अभियंता के पद पर कार्यरत थे और अपने दो बेटों और एक साधारण स्वभाव की पत्नी के साथ कॉलोनी के फ्लैट में रहते थे। उनकी उम्र करीब पचास वर्ष रही होगी। अरविन्द से वह करीब बीस साल बड़े थे। लम्बा कद और सावला रंग, वह बड़े हंसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे। अधिकतर वह स्वयं को लेकर ही मज़ाक किया करते थे। उम्र में काफी फर्क होते हुए भी वह अरविन्द के एक बहुत अच्छे साथी सिद्ध हुए थे। कुछ दिन पहले ही जब अरविन्द देहरादून में अपना कार्यभार संभालने आया था तो सिवाए कुछ अफसरों के, जिन से वह वहाँ पहुँचते ही औपचारिक तौर से मिला था, उनके अलावा किसी से भी कोई जान पहचान नहीं थी। मिस्टर नाथ ही थे जो पहली मुलाकात में ही उसको भा गए और धीरे धीरे उनके सम्बन्ध घनिष्ठ होते चले गए। अरविन्द न केवल अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए बल्कि सरकारी सुझावों के लिए भी उन पर काफी हद तक निर्भर था। नाथ साहब अरविन्द के लिए घर के समान और सुविधाएं उपलब्ध कराने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। अरविन्द नाथ साहब के साथ उनके पिछले बंगले पर कई महीनों तक रहा जब तक उस को अपना स्वयं का मकान नहीं मिल पाया था। लेकिन उन चंद महीनों के साथ ने उन दोनों को इतना करीब ला दिया कि वह अलग होने के बाद भी दूर नहीं जा पाए। मिस्टर नाथ एक

अच्छे कलाकार भी थे और अलग होने के अच्छा बजाते थे। दोनों संध्या के समय शतरंजा रखेला करते थे। वे अपनी बाईलज बडजरविन्द का गेस्ट रूम में सोने का प्रबंध करते थे और हर शाम का खाना दोनी देखरेख में आरति थे। असल में अपने घर में शिफ्ट हो जाने के बाद भी अरविन्द को अधिकतर समय नाथ साहब तथा अन्य मित्रों के साथ ही कटता था।

अब यह सुन के कि उनकी हालत बहुत अधिक ख़राब है, उसका घबरा जाना स्वाभाविभव व्यास अरविन्द जैसे तैसे तेज़ साइकिल चला कर वहाँ पहुँचे। प्रथम माले पर स्थित नाथ सहाब के मकान पर पहुँच कर उसने दरवाज़ा खटखटाया। दस्तक सुनकर स्थित साहब की पत्नी ने दरवाज़ा खोला। अरविन्द उन का घबराया हुआ चेहरा देखता ही नाथाया। आँखों में आंसू भरे हुए थे जो निकलने को मचल रहे थे। अरविन्द सांत्वना के कुछ शब्द बोलते हुए धीरे धीरे नाथ साहब के कमरे की ओर बड़े। यह कहने कि कुछश्यकता नहीं है कि उनके दोनों लड़के इतने छोटे थे कि उन से अपनी माँ को इस स्थिति में सँभालने की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। मगर फिर भी अपने आपको बह किसी तरह संभाली हुई थी।

नाथ साहब के कमरे के पास पहुँच कर अरविन्द ने दरवाज़े पर खड़े होकर कमरे का जाएज़ा लिया। उसकी निगाह पलंग पर लेटे हुए नाथ साहब से होते हुए पलंग के पास नीचे फैली हुई खून की उल्टी पर जाकर रुक गई। अरविन्द को यह समझने में देर नहीं लगी कि हालत जितनी उसने सोची थी उस से कही ज़्यादा ख़राब थी। क्योंकि उल्टी हुए करीब एक घंटे से ज़्यादा हो चुका था लिहाज़ा अरविन्द को यह सोचने का समय मिल गया कि इस आपातकालीन स्थिति से कैसे निपटा जाए। उस ज़माने में आने जाने के साधन बहुत सीमित हुआ करते थे और संचार व्यवस्था तो जैसे न के बराबर थी। इधर अरविन्द के पास इंतज़ार करने का समय ही नहीं था। उसने जैसे तैसे टेलीफोन पर अपने कुछ पुराने साथी अफसरों से संपर्क किया और उनकी सहायता से नाथ साहब को लेकर जिला अस्पताल के आपातकालीन काउंटर पर पहुँच गए। धीरे धीरे सूरज की किरणें क्षितिज में उभरने लगी थीं और उधर अस्पताल भी अब धीरे धीरे पूर्ण रूप से कार्यरत होता जा रहा था।

डॉक्टरों ने नाथ साहब का निरीक्षण करके आवश्यक इलाज की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें कुछ आराम मिला और हालत आगे गिरने से रुक गई। हालाँकि उल्टियाँ इतनी तेज़ी से नहीं हो रही थी जितनी तेज़ी से पहले हो रही थी परन्तु पूर्णरूप से रुकी भी नहीं थी। इसलिए उनका इलाज अस्पताल में ही होना ज़रूरी था। मगर यहाँ फिर एक समस्या खड़ी हो गई। अस्पताल छूत बीमारियों के रोगियों को इस डर से अस्पताल में दाखिल नहीं करते थे कि कहीं उस बीमारी का इन्फेक्शन अस्पताल के दूसरे मरीजों तक न पहुँचे। और नाथ साहब को भयानक तपेदिक की बीमारी डॉक्टरों ने बताई। बड़ी कोशिशो के बाद अरविन्द अस्पताल के अधिकारीयों को इस बात को मनवाने में सफल हो पाए कि वे उनको एक निर्धारित स्थान को सुरक्षित करके एडमिट कर लें जो रोगियों के वार्ड से दूर हो। लेकिन इन तीन चार घंटो की वार्ता का प्रभाव यह हुआ कि उनकी बीमारी का खतरनाक पहलू सामने खुल कर आ गया। लिहाज़ा जैसे ही उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया गया उनके बहुत से साथी और दोस्त उन्हें ऐसे छोड़कर चले गए जैसे डूबते जहाज़ से चूहे भागते है। शाम होते होते अरविन्द के अलावा नाथ साहब के पास कोई नहीं था और अकेले ही अरविन्द ने उन्हें उस वक़्त तक संभाला था जब तक दूसरे दिन उनके परिवार के सदस्य आ नहीं गए। यह अरविन्द के लिए वाकई एक बहुत मुश्किल काम था जो उसने बिना किसी झिझक के बखूबी किया हालाँकि बहुत से लोगों ने उसे इशारे से डराया भी कि नाथ साहब के पास रहना उस के लिए बहुत ख़तरनाक हो सकता था। नाथ साहब रात भर खून की उल्टी करते रहे और अरविन्द बहुत समझदारी से उन्हें संभालता रहा। आखिरकार वह डरावनी रात जैसे तैसे बीत गई और दूसरे दिन का सूर्य हल्की चमकीली किरणों के साथ आशा का सवेरा लेकर आया। नाथ साहब अब खतरे से बाहर थे और खुद को काफी बेहतर महसूस कर रहे थे। नाथ साहब के भाइयों और भतीजों ने आकर उन्हें संभाला और अरविन्द को गर्मजोशी से शुक्रिया अदा करके आराम करने की सलहा दी।

अरविन्द सोने के लिए अपने घर चला गया लेकिन वह सो नहीं पाया। उसे बार बार नाथ साहब के सहयोगियों और मित्रों के वह शब्द याद आते रहे जो उसे नाथ साहब को छोड़ के जाने के लिए उकसाते थे। नींद के लिए झपकती हुई आँखों से उसे यह ख्याल आया अगर उसके साथ ऐसा हुआ होता तो क्या होता। वह भी तो इस शहर में अकेला ही था। सिवाए कुछ मित्रों के यहाँ और कौन था उस का अपना। क्या वह तमाम लोग जिनके साथ उसने खाया पिया, हँसा बोला, और इतना समय साथ साथ गुज़ारा उसको ऐसी ख़राब हालत में छोड़ के चले जाते? हां, उसने सोंचा यह हो सकता था। लेकिन फिर उसे ख्याल आया कि कोई न कोई ऐसा ज़रूर होगा जो कृतघ्न का शिकार न होते हुए उस की तरह उस का सहारा बन के उसके साथ खड़ा रहता।

****

मीडिया मैप वेबसाइट पर

Media Map HOME TODAY`S EDITION आज का संस्करण VIDE

21 Nov

"पैसों से परे, इंसानियत का सबक: 'कौन बनेगा करोड़पति' का खास पल"

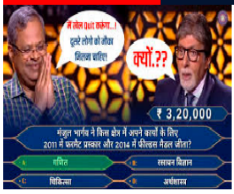

हमारे संवाददाता द्वारा

नई दिल्ली | गुरुवार | 21 नवम्बर 2024

"कौन बनेगा करोड़पति" - हाल ही में एक एपिसोड में, "फास्टेस्ट फिंगर" राउंड में सबसे तेज जवाब देने वाले नीरज सक्सेना ने हॉट सीट पर जगह बनाई। वह बहुत शांति से बैठे रहे, न चिल्लाए, न नाचे, न रोए, न हाथ उठाए और न ही अमिताभ को गले लगाया। नीरज एक वैज्ञानिक, पीएचडी, और कोलकाता में एक विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। उनका व्यक्तित्व सरल और सौम्य है। उन्होंने खुद को सौभाग्यशाली माना कि उन्हें डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के साथ काम करने का अवसर मिला। उन्होंने बताया कि शुरू में वे केवल खुद के बारे में सोचते थे, लेकिन कलाम के प्रभाव में उन्होंने दूसरों और राष्ट्र के बारे में भी सोचना शुरू किया।

नीरज ने खेलना शुरू किया। उन्होंने एक बार ऑडियंस पोल का उपयोग किया, लेकिन उनके पास "डबल डिप" लाइफलाइन होने के कारण उसे

Media Map HOME TODAY`S EDITION आज का संस्करण VIDEO

20 Nov

Maharashtra: Why Will Shinde And Ajit Pawar Not Succeed?

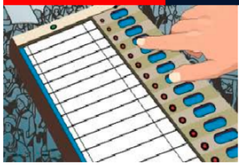

Prof. Pradeep Mathur

New Delhi | Wednesday | 20 November 2024

The assembly elections being held today in Maharashtra are important not only for the state but also for the political scenario of the entire country. Through this election, the people of Maharashtra will not only decide the future of their state, but it will also indicate the direction in which the thinking and voting trend of the public can go in other states of the country in the future. There have been many issues in this election which have affected the political direction and future of the state. Also, the reputation of many big political personalities and parties is at stake in this election.

Media Map HOME TODAY`S EDITION आज का संस्करण VIDE

20 Nov

Seeking Peace In A Fractured Manipur: Recommendations From The Ground

Mohd Naushad Khan

New Delhi | Wednesday | 20 November 2024

The Socialist Party (India), led by Magsaysay award winner Sandeep Pandey, visited five relief camps in Imphal between November 11 and 12, 2024, to assess the living conditions of displaced individuals affected by the ongoing violence in Manipur. Based on their findings, the party issued recommendations to promote peace, provide equitable relief, and pave the way for dialogue between the conflicting Meitei and Kuki communities. These recommendations were submitted to the Deputy Commissioners of Imphal (West and East) and the Directorate of Health Services, Manipur.

The Socialist Party's visit highlighted significant discrepancies in the relief provided to camp inmates. At

Media Map HOME TODAY`S EDITION आज का संस्करण VIDE

15 Nov

नवम्बर 15 : गुरु नानक जयंती

जो एक सच्चे समाज सुधारक थे

आकांक्षा माथुर

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया | शुक्रवार | 15 नवंबर 2024

जिस युग में गुरु नानक का जन्म हुआ, उस समय भारतीय समाज गहन पतन की अवस्था में था। वह जाति-पाति की जकड़ में फंसा हुआ था और धीरे-धीरे अपनी समाप्ति की ओर बढ़ रहा था। इसके अतिरिक्त, उस समय की राजनीतिक दशा भी निराशाजनक थी। देश के बड़े हिस्सों पर विदेशी आक्रमणकारियों का शासन था, जो अपने हितों के लिए लोगों का शोषण कर रहे थे। समाज में फूट थी, और लोग अत्याचारों के बोझ तले कराह रहे थे। ऐसे समय में गुरु नानक ने समाज में नई आशा और उत्साह का संचार किया।

Media Map HOME TODAY`S EDITION आज का संस्करण VIDE

12 Nov

उमर अब्दुल्ला के लिए मुख्यमंत्री पद काँटों का एक ताज

अश्विनी कुमार

जम्मू-कश्मीर | मंगलवार | 12 नवंबर 2024

जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल और नेशनल कॉन्फ्रेंस के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के बीच की खटपट प्रशासन में तनाव ला सकती है। उमर अब्दुल्ला, जो जम्मू-कश्मीर के पहले मुख्यमंत्री बने हैं, के पास इस बार उतनी स्वतंत्र शक्ति नहीं है जितनी उन्हें 2009 में मिली थी। इस बार उनके सामने कांटों भरा ताज है और प्रशासनिक चुनौतियां गंभीर हैं।

उमर अब्दुल्ला का राजनीतिक सफर, उनके पिता फारूक अब्दुल्ला की विरासत और जनता का विश्वास उनके लिए बड़े सपनों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। हालांकि, इस बार स्थिति पहले से अलग है। राज्य का पूर्ण दर्जा छिन जाने और उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के साथ सत्ता साझा करने के

diamap.co.in/blog/विखंडितमणिपुरमेंशांतिकीतलाश

ना करना पड़ेगा। उनकी पार्टी नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जम्मू-कश्मीर में अच्छा समर्थन हासिल किया है

Media Map HOME TODAY`S EDITION आज का संस्करण

17 Nov

November 14: Prayas Founders Day

Children Are Special And Special Children Are More Special

Amitabh Srivastava

New Delhi | Monday | 18 November 2024

November 14 became a cause celebrated for the entire social sector as Prayas JAC Society Centre, a confluence of many diverse but related streams celebrates its 36th Founders Day on this day.

As Mr Amod K Kanth, Founder and Mentor of Prayas, fondly mentions, the journey of Prayas is "a

Visit Our Bilingual Website: www.mediamap.co.in

Subscribe To Our YouTube Channel : Media Map News

मीडिया मैप दिसम्बर

SCHOLARS DESTINATION

RNI NO. : UPHIN/2016/68336

Please stay in Scholars destination and explore the beauty of surrounding areas .

PLEASE CONTACT

9045005700 | 9910322682 | www.sdmotel.com | info@sdmotel.com

BHALUGAAD WATERFALL

KAINCHI DHAM

MUKTESHWAR DHAM

CHAULI KI JALI